मुक्तिप्रकाश

विरचक

पादरी पी. एम. बक साहिब

मेरठ

लखनऊ

क्रिस्ट पबलिशिङ्ग हौस.

सन् १९१०.

मुक्ति प्रकाश ॥



पहिला पर्व ॥

आभाष.

मेरे बुढ़ापे का आरम्भ हुआ. परलोक जाने का दिन निकट है. इस जगत में हमारा जीवन थोड़ेही दिनों की यात्रा है. मुझे बड़ी चिन्ता और चाह है कि अपने संगी यात्रियों के लिये मैं सहायता और अगुवाई का कारण बनूं. विशेष करके मैं उन को भलाई का मार्ग दिखाना चाहता हूं जो पाप की बुराई और सच्चे धर्म की कुशलता कम समझते हैं. मनुष्य में दो वस्तयें पाई जाती हैं, अर्थात शरीर और आत्मा, शरीर माटी से

बना हुआ है और मृत्यु उसको बहुत जल्द शिकार कर लेती है. आत्मा अमर और अनमोल वस्तु है. आत्माही की भलाई की अधिक चिन्ता होनी चाहिये. इस संसार की सारी सम्पत्ति शरीरही से सम्बन्ध है दो चारदिन तक जगत की वस्तुओं से काम है और तब वह सब छूट कर फिर हाथ न आयेंगीं. वह इस योग्य नहीं हैं, कि हम उन्हें अधिक पियार करें. पर-लोकही हमारी आत्मा का घर और निज देश है. जो आत्मा के लिये सच्चा धन प्राप्त किया जाये तो वह धन अविनाशी होगा. असंभव होना है कि वह जाता रहे. परलोक की मुख्य सम्पत्ति जिसे प्राप्त करना अवश्य है आत्मिक और स्वर्गीय जीवन है. वह जीवन तबही मिलता है जब कि हमारी आत्मा से पाप और उसकी

अशुद्धता दूर की जाती है. वह जीवन ईश्वर की संगत में बीतता है. यह आत्मिक जीवन इसी संसार में मनुष्यों को दिया जाता है. आरम्भ में वह जीवन छोटे बालक कासा होता है, और उसको पालना और बढ़ाना हमारा एक बहुत बड़ा काम है. यह जीवन हर प्रकार से पवित्र और उसका बड़ा बैरी पापही है. इसी दशा में जो मनुष्य धर्म्मी होना चाहते हैं सो पापों और अपराधों से बचे रहें जब हम पाप और अपवित्रताई से छुटकारा पायें तबही ईश्वर हमारे संग संग रहता है. उसी के दर्शन और सङ्गत से आत्मा का जीवन बना रहता और बढ़ता जाता है. ईश्वर से न्यारा मनुष्य की आत्मा हाजिर तो रहेगी, पर उसकी भलाई और कुशलता नाश होगी. जब मन में ईश्वर का बासा

प्राप्त हो तो मेरी सिद्ध होगी और आत्मिक बल बढ़ता जायेगा. जब हम परमेश्वर की संगत जानें तो उस से बड़ी मित्रता और प्रेम होगा उसी दशा में वह स्वर्गीय पिता है और हम उसके प्यारे पुत्र ठहरते हैं. जब ईश्वर से ऐसा मेल प्राप्त हो तो उसकी इच्छा बड़ी प्रसन्न और प्यारी होगी और उस पर चलने की बड़ी चिन्ता और चाह बनी रहेगी. आज्ञाकारी से भी ईश्वर हमारी सहायता करता रहता है. जब वह हमारा हाथ पकड़े रहे तो गिरने का डर न होगा. वह अपने विश्वास करनेहारे सन्तान को हर प्रकार से सम्भालता है. वह मनुष्य जो ईश्वर के दर्शन और संगत को पाकर उसको जानते हैं और सच्चे धर्मी और मन के पवित्र बन रहे हैं सकल संसार के लोगों के लिये उसी

ईश्वर के चुने हुये साक्षी हैं. सब को ऐसों की साक्षी की आवश्यकता बहुत है, ताकि वह जानें कि पाप से उद्धार और परमेश्वर से संगत और मित्रता को प्राप्त करना कैसी बड़ाई और महिमा की बात है. यह भी सब को जानना चाहिये कि वह ऐसी मुक्ति पा सक्ते हैं. मैं दूसरों के लाभ की आशा से वह बातें लिखता हूं जिन्हें मैं ने बहुत दिनो से परख परख कर भली भांति जान लिया है. ईश्वर करे कि हम सब उसी का वह ज्ञान और पहचान पायें जो उसके दर्शन और संगत से मिलता और कि पाप से बचकर हम उसकी इच्छा पर चलते हुये इस जीवन को काटते जायें ॥

———0———

दूसरा पर्व ॥

पाप की पहिचान और पछतावा.

मैं अज्ञान था जब ईश्वर ने मेरी आत्मा की आंखों को यहां लों खोल दिया कि मैं पाप और बेधर्मी की बुराई और संसारिक वस्तुओं की व्यर्थता को जान सका. मैं उन लोगों की सभा में था जो सच्चे धर्मी और ईश्वर के पियार करनेहारे थे मैं ईश्वर के वचन का उपदेश सुन रहा था. जब मनुष्य ऐसे धर्मियों के सङ्ग हों और ईश्वर का ज्ञान सीखें तो त्राणकर्त्ता को अवसर मिलता है कि पाप की पहचान दे और त्राण का मार्ग दिखावे मैं ने बड़ी सफाई के साथ उस वक्त अपने पापों को और उनके अन्त को देख लिया. मुझ को पूरा ज्ञान हुआ के यह सब बुराइयां मेरी ही

हैं और कि मुझ ही को उसका लेखा देना होगा. कोई कोई कहता है कि ईश्वरही पाप कराता है. अनहोना है कि यह बात सत्य हो. यदि यह बात सत्य होती तो केवल ईश्वरही पापी ठहरता और सब मनुष्य निष्पाप होते. यदि पाप के विषय में ईश्वर मनुष्यों को निर्बल करता तो वह अपराधी नहीं हो सकते. वह लकड़ी जो मारने में किसी को काम आवे पाप नहीं करती और न वह दण्ड के योग्य है वह चलाई चलती और चलने से नहीं बच सकती. यदि मनुष्य ऐसे दुर्बल ठहरते तो निष्पाप होते. परन्तु सब अपराधी जो अपने आप को पहचानते हैं भली भांति जान लेते कि हमही पापी और दंड पानेहारे हैं जब मैं ने ऐसी सफाई के साथ अपने पापों को देखा तो मेरा

मुंह बन्द और ईश्वर के साम्हने मैं निरुत्तर हुआ मुझ में बड़ी घबड़ाहट और भय उत्पन्न हुआ. मैं ईश्वर को भूल गया था. मैं अपस्वार्थी बन कर अपने ही लिये अपने जीवन को काट रहा था मुझे सोच और समझ न हुई थी कि ईश्वर ने इसी कारण मुझ को संसार में भेज दिया था कि मैं उसका प्रणाम और सेवा करूं और दूसरे मनुष्यों की भलाई और कुशलता के लिये अपने जीवन के दिनों को बिताऊं. अपनी आत्मा की मुक्ति के विषय मे मैं नींद की सी दशा में रहा था. बहुत सी बातो मे ईश्वर की आज्ञायें उलंघन की गई थीं मेरी अंधाधता और मन की बुराई बहुतही बड़ी दिखाई देती थी अपने पापो से मुझ में बड़ा घिन उत्पन्न हुआ और उनके कारण मुझे अपार

शोक हो गया. मैं ने साफ देखा कि वह आत्मा जो अपराधी और अशुद्ध हो अवश्य नरक की अधिकारी होगी. मनुष्य की आत्मा की दशा और उसके बासा में मेल हो जायेगा अनहोना है कि पापी मनुष्य दंड और क्लेश से बचे रहें. जब पाप मिटें और हमारी आत्मा निर्मल हो जाये तबही सुख और चैन की सूरत हो सक्ती है धर्मी और पवित्र मनुष्य की भलाई और कुशलता की नेव और दाता ईश्वर की संगत ही में पाया जाता है. जब मेरी आंखें खुलीं और मुझ पर यह बातें प्रगट हुई तो डर और व्याकुलता के मारे बड़ी कपकपी हुई और बहुत आंसू बहने लगे. यही दशा अवश्य हर एक की होगी जब पाप और मन की मलीनता और उनकी बुराई की पहचान प्राप्त हो जाये. जब पाप

हो और मनुष्य न डरे और न घबराये तो भली भांति जाना जाता है, कि अबलों आखें नहीं खुलीं और कि अज्ञानता का अंधियारा छा रहा है. जब मैं ने इसी रीति से अपनी आत्मिक दशा को पहिचाना तो सारी संसारिक वस्तुयें तुच्छ और निर्लोभ दृष्टि आईं. कहीं भलाई की आशा जगत में देखी न गई. यह संसार मेरे लिये किसी काम का न रहा. ईश्वर ने बड़ी सफाई के साथ पाप का अन्त दिखलाया. जब आत्मा में पाप का बिगाड़ हाजिर हो तो शरीर का चैन और सुख देना हमको ठट्ठों में उड़ाना है. जब घर का स्वामी महा दुखी हो तो उसे चिन्ता न होगी कि घर अच्छा हो या बुरा पहिले से मेरे पाप वैसेही बुरे थे पर जब उनकी बुराई का ज्ञान न हुआ तो मैं अपने आप को कुशल

लेस जानता था. कैसे शोक की बात है कि पाप में अधिक लोगों को ऐसा ही धोखा होता है. वह समझते हैं कि भलाई प्राप्त होगी जब कि बिनाश सामने हाज़िर है यदि ईश्वर मुझको ज्योति न देता तो मैं जल्द नष्ट हो जाता ॥

---o---

तीसरा पर्ब ॥

यीशु मसीह का ग्रहण करना.

जब मेरी आत्मा में ईश्वर की ज्योति के आने से ऐसे शोक और घबड़ाहट और भय उत्पन्न हुये तो मैं ने यीशु मसीह पर मन लगाया. जब कोई पापी अपने मन की अपार बुराई और मलीनता को पहिचाने और यह भी जान ले कि इनका फल बिनाश है

तो कोई दूसरा दृष्टि नहीं आता जिस पर उद्धार के लिये भरोसा हो ईश्वर का एकलौता पुत्र इसी कारण देहधारण करके जगत में आया कि सारे पापियों को जो उसे ग्रहण करें उनके पापों से बचाये. जब उसका जन्म हुआ तो एक नाम जो उसे दिया गया इम्मानुएल था. इस बड़े नाम के अर्थ यही है, अर्थात ईश्वर हमारे सङ्ग. अगर्चे मसीह में मनुष्य के सारे गुण हाज़िर हैं तो भी सम्पूर्णता के साथ ईश्वर का स्वभाव भी उस में पाया जाता है ताकि वह अत्यन्त बड़ा काम जिसके लिये वह संसार में आया पूरा किया जाये वह मृत्यु से पापियों के बदले में बलिदान हुआ. फिर तीसरे दिन वह जी उठा और सदा लों जीता रहता है. ईश्वर होकर और हमारे सङ्ग रहते हुये वह पापमोचन और आत्मिक पवित्रताई

के देने के लिये हर प्रकार से तैयार रहता है. वही अकेला मनुष्यों से कहता है, कि "हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम देऊंगा." केवल उसी के विषय में लिखा है, कि "वह अपने लोगों को उनके पापों से बचायेगा." उसी के ग्रहण करने से पाप और उसकी अपार अशुद्धता से उद्धार मिलता है. ऐसे उद्धार का पाना मुक्ति का पाना है. यीशु मसीह को ग्रहणता ऐसी मुक्ति की शर्त है. प्रार्थना और बिन्ती के करने से मुझे पूरा ज्ञान हुआ कि यह हमारा मुक्तिदाता तैयार और पास है कि मुझे बचाये. परन्तु उसकी ऐसी तैयारी और हाजिरी के ज्ञान के साथ में इस बात के विषय में भी नई रीति से सुझाया

गया कि उसको ग्रहण करना क्या है और कैसा कठिन है. ऐसी दशा हुई कि गोया मसीह आप खड़ा होकर मुझ से पूछता है. प्रश्न यह था कि "यदि मैं तुझे ग्रहण करूं और तेरे पापों को मिटाऊं और मन की मलीनता दूर करूं तो क्या, तू मुझे अपनी आत्मा का राजा कर लेगा? क्या, तू मेरेही लिये जियेगा और जीवन भर सब बातों में मेरी इच्छा पर चलेगा?" इस बात के पूछने से मैं बहुत घबड़ा गया और मन मसीह से कुछ हट भी गया. मुझ में अपस्वार्थ का राज हुआ था और उसका बल बढ़ा था. मैं तैयार था कि बैबल की शिक्षा को सत्य जानूं, और कि ईसाइयों की रीतियों का ग्रहण करूं, और कि प्रगट में ईश्वर का भजन किया करूं. मैं तैयार भी था कि कुकर्म्मों से अलग

रहूं परन्तु इम्मानुएल ने इन बातों से बहुत अधिक करके मुझ से मांगा. मैं ने भली भांति जान लिया कि अगर मसीह की यही शर्त ग्रहण की जावे तो अब जब मसीह की इच्छा और हो और मेरी और तो अपनी इच्छा को दबानाही पड़ेगा, और कि बहुत से कामों को करना होगा जो मुझे प्रसन्न नहीं हैं. पहिले ऐसी शर्त के ग्रहण करने से मैं ने साफ इनकार किया. अब फिर मैं ने अपने पापों और उनके दंड को देख लिया तो ऐसा डर और शोक और व्याकुलता हुई कि फिर मैं मसीह से बिन्ती करने लगा. मैं ने चाहा कि प्रभु इन कठिन शर्त को दूर कर दे और मुक्ति का पाना और सहज करे. परन्तु उस ने इस बात में मेरी न सुनी. अनहोना था कि वह ऐसी बिनती को ग्रहण

करे. पाप का मूल और सोता यही है कि मनुष्य अपनीही इच्छा पर चले जब कि वह ईश्वर की इच्छा के बिरुद्ध है. सचमुच मैं यही चाहता था कि मैं पाप करताहूं। जाऊं और कि मसीह मुझे उसके दंड से बचा ले. उसके बचाने की रीति हर प्रकार से दूसरी है परमेश्वर ही की इच्छा का मार्ग रूपी धर्म्म और पवित्रताई का मार्ग है. जो उस से न्यारा रहे सो पापही की बाट पर चलेगा और पाप का फल पायेगा मुझ मे बड़ी अज्ञानता थी जिससे मैं ने प्रभु की इच्छा को ग्रहण करना बुरा जाना ऐसी अज्ञानता में कितने लोग फसे रहते हैं. एक दो घंटे लों इस भारी शर्त के ग्रहण करने से मैं इनकार करता रहा. धर्मी मित्रों ने मुझे बहुत समझाया कि यीशु पर बिश्वास किया जाये. पर मुझे बिश्वास

करने का ज्ञान न था. मैंने तो मन में मान लिया कि यीशु मसीह ही अकेला मुक्तिदाता है, नहीं तो मैं उसकी ओर क्यों फिरता. मैं समझता तो था कि उसी के द्वारा से पाप मिटाये जाते और मन शुद्ध किया जाता है. यह मैं न जानता था कि विश्वास करने में सब से बड़ी बात यही है कि हम प्रभु की इच्छा को ग्रहण कर लें और उस पर चलने को तैयार हों. जब तक यही बात न हो तब तक हम विश्वास करने से बहुत दूर रहते हैं. प्रभु ने मेरी बड़ी व्याकुलता और दुख को देख कर मेरी सहायता किई, नहीं तो मैं उस कठिन शर्त को कभी ग्रहण न कर सकता. पीछे मैं ने मन से उस भारी प्रश्न के उत्तर में मसीह से यह कहा, कि "हां, हे प्रभु, अब मैं तैयार हूं और तेरी इच्छा को ग्रहण कर लेता

हूं, और उसी पर चलते हुये मैं अपने जीवन को बिताऊंगा." विशेष करके मेरे लिये मसीह पर विश्वास करना यही था. इस शर्त के पूरा करने से प्रभु ने अवसर पाया कि मुझ में और मेरे लिये अपना बड़ा काम करे. इस अद्भुत काम के करने में उसने कुछ भी देरी न किई. उस काम का वर्णन बड़े ध्यान के योग्य है ॥

चौथा पर्व ॥

पापमोचन और नया जन्म.

मैं ने पहिले न जाना और न सोचा था कि यीशु मसीह ऐसी अद्भुत रीति से मनुष्यों को मुक्ति और मन की सेरी और आनन्द दे सकता है मुझे सामर्थ नहीं है कि

उसका पूरा वर्णन करूं. जब मैंने प्रभु की इच्छा को ग्रहण किया तो एकाएक मन की सारी घबड़ाहट और भय दूर हुआ. शोक के सारे आंसू पोंछे गये. मन बड़ी शांति और चैन से भर गया मुझे ज्ञान न था कि ईश्वर की ओर से मनुष्य की आत्मा को ऐसा सुख मिल सक्ता है. उसी वक्त भी ईश्वर का अद्भुत दर्शन भीतर की आंखों को दिया गया और उस से मुझे बड़ा अचम्भा हुआ. मैं पहिले न जानता था कि मनुष्यों को ऐसा ईश्वरीय दर्शन मिल सकता है. उस दर्शन के सङ्ग ईश्वर का अथाह प्रेम नई रीति से मुझ पर प्रगट हुआ. बैबल में उस प्रेम का अद्भुत वर्णन तो मिलता है, पर उस रात से पहिले मुझे सूझा न गया कि ईश्वर मुझही को पियार करता है. उसी समय मैं ने समझा कि

वह मेरा स्वर्गीय पिता है और पिता की नाईं मुझ से प्रेम करता है. मेरे मन में उसी वक्त भी परमेश्वर से पुत्र का सा प्रेम जारी हुआ. नया जन्म पाकर मैं उस रात को उसका सच्चा पुत्र बना और इसी दशा में ऐसा प्रेम हो सकता था. नये जन्म के बिना अनहोना है कि यह प्रेम किसी के मन में दृष्टि आये जब यह बड़ा प्रेम किसी में पाया जाये तो उससे प्रगट है कि नया जन्म प्राप्त हुआ. इस नये और अद्भुत प्रेम के संग मुझे साक्षी ईश्वर की ओर से बड़ी सफाई के साथ मिली कि तेरे सारे पाप मिटाये गये हैं. ईश्वर के साम्हने मेरी ग्रहणता प्यारे पुत्र की सी थी. मेरे मन की मलीनता भी भस्म किई गई थी. उसके बदले में आत्मिक पवित्रताई दी गई. उसी दशा में ईश्वर और मेरे बीच में

ऐसा परस्पर का प्रेम जारी हुआ था. मैं ने गोया उसी रात को अपने स्वर्गीय पिता की गोद में पनाह पाई मैं भली भांति उस प्रेम को जानता हूं जो मनुष्य के बीच में और विशेष करके उनके बीच में जो एकही कुटुम्ब के हैं, और वह प्रेम बड़े आदर के योग्य है. पर ऐसा प्रेम उसके साम्हने जो ईश्वर से हो जाता है जब कि पूरे नाप के साथ नया और आत्मिक जीवन किसी को दिया जाता बहुतही तुच्छ ठहरता है. मैं ने उस रात को समझ लिया कि सच्चा धर्म पवित्र प्रेमही है. प्रेम का यह जीवन उस समय मुझे दिया गया. इस बड़ी तब्दीली और नये जीवन के संग मन का ऐसा आनन्द हुआ जो अकथ्य और महिमा संयुक्त था. मेरी आत्मा गोया स्वर्ग के आनन्द के सागर में

डुब रही थी. शोक के आंसुओं के बदले आनन्द के बह रहे थे. मेरी आत्मा ईश्वर की बड़ाई और स्तुति करती गई. जब मैं ईश्वर की भजनघर मंडली से अपने घर जाता था तो देख पड़ा कि सब तारे भी ईश्वर की बड़ाई कर रहे हैं मार्ग में कुछ भी मेरे संग आनन्द करते हुये दूष्ट आवे. मैं नया मनुष्य बना था और सारी सृष्टि भी ईश्वर की महिमा से परिपूर्ण होकर नई दिखाई देती थी. जब किसी की आत्मा में ईश्वर का बासा हो जावे तो आकाश और पृथिवी की वस्तुयें नई और बड़ी मनोहर देखी जाती हैं. इन बातों के तजुरुबे से मैं बड़ा अचिम्भत हुआ, क्योंकि मुझे कुछ ज्ञान और सोच न था कि ऐसी रीति से यीशु मसीह मुक्ति दे सक्ता है और न मैं ऐसी बड़ी आशीषों की बाट देखता

या. ईश्वर सब पढ़नेहारों को सच्चा आत्मिक जीवन दे और तब वह भली भांति इस वर्णन को समझेंगे॥



पाचवां पर्व.

पाप करने के विषय में मनकी तब्दीली.

अब अढ़तालीस बरस के लगभग बीत गये जब से उस रात को यीशु मसीह के द्वारा से ईश्वर मुझको मिला और मैं उसका सच्चा पुत्र बना. ज्यों ज्यों काल के बीतने से वह रात दूर होती जाती है त्यों त्यों मन और जीवन की वह तब्दीली जो प्राप्त हुई बड़ी और अद्भुत दिखाई देती है. उस रात को मैं सचमुच नई रीति से जीने लगा. तब से साल बसाल उस आत्मिक और नये जीवन की महिमा

बढ़ती जाती है. वह जीवन मेरे लिये अनमोल ठहरता है. उसमें कई एक बड़ी उत्तम बातें पाई गईं, औ मुख्य बिचार के योग्य हैं. पढ़नेहारों के लाभ की आशा से मैं उन बातों को लिख देता हूं ॥

एक बात यह है कि कुकर्मों के विषय में मेरी आत्मा में बड़ी लड़ाई हुई. अब नया जन्म पाकर मैं ईश्वर का सच्चा पुत्र बना तो बिलकुल नई रीति से मैं उसकी व्यवस्था का पाबन्द हुआ॥

परमेश्वर की व्यवस्था उसकी प्रगट किई हुई इच्छा है. उस इच्छा के अनुसार बनना और करना सच्चा धर्मी होना है. ऐसी व्यवस्था की बिरुद्धता पाप है. उन सारी आज्ञाओं में जो ईश्वर की इच्छा से सम्बन्ध हैं मनुष्यों की आत्मा की दशा और चालचलन का नमूना मिलता है. हर एक सच्चा

धर्मी इस नमूने को बड़े आनन्द के संग ग्रहण करता है. जब मेरे मन में ईश्वर से पुत्र का प्रेम जारी हुआ तो वह व्यवस्था या उसकी प्रगट किई हुई इच्छा बड़ी पियारी होने लगी और उस व्यवस्था की बिरुद्धता जो ही पाप का सोता है मुझे बड़ी घिनौनी हो गई. उसी समय से मैं आत्मिक पवित्रताई और सच्चे धर्म की उत्तमता और महिमा जानने लगा. न केवल वह बातें ऐसी बड़ी और उत्तम दृष्ट आई पर मुझे ऐसी सामर्थ्य भी दिई गई कि पाप पर जयवन्त होकर मैं सच्चाई के मार्ग पर चल सक्ता था. नये जन्म के पाने से पहिले जब परीक्षाओं में बुराई की ओर बड़ा खिंचाव हो जाता था तो मैं दुर्बल होकर पाप में फंस जाया करता था. उन दिनों में भी अन्तःकरण में कुछ उजियाला

तो था और मैं धर्म की भलाई और पाप की बुराई को पहिचानता था परन्तु एक बड़ी रोक यह थी कि मुझ में बल की ऐसी कमी थी कि कुकर्म्मों के खिंचाव को जीत लेना अनहोना था. मैं ऐसा अपस्वार्थी भी था और मन में पाप की ओर ऐसा झुकाव था कि मुझे ईश्वर की व्यवस्था प्रसन्न न हो सकी. मुझ में न ईश्वर से और न मनुष्यों से प्रेम पाया जाता था. प्रेमही के बल से ईश्वर की इच्छा पूरी किई जाती है. अगर प्रगट में हम उसकी आज्ञाओं पर चलें और प्रेम न हो तो सच्ची आज्ञाकारी न होगी. जब मैं पहिले अपस्वार्थ के मार्ग में पाप करता था तो मेरा मन बारबार मुझे दोषी ठहराता था और मैं बड़ा लज्जित हुआ करता था. मैं वक्त बवक्त भी ठहराता था कि आगे को मैं कुकर्म्मों

से प्यारा रहूंगा और सुकर्म्मी बना रहूंगा. पर ऐसी भली चिन्ता और चाह से कुछ भी न बना. अपनी आत्मा में मैं न ऐसा बिगाड़ पाया कि जबही परीक्षा हो तो मैं लालच या क्रोध या बैर या किसी दूसरी बुराई और मलीनता में फंसा करता था. मैं पापही का दास था और उससे छूटना अनहोना था. मैं ईश्वर का सच्चा प्रकाश न कर सकता था. पाप के कारण उससे बैर और बिरुद्धता बनी रहती थी. ऐसी दशा की बुराई का कुछ ज्ञान मुझ में तो था, परन्तु उससे छुटकारा पाना मेरे बस से बाहर था. बारबार नेकी का इरादा तो करता था पर पूरा करना अनहोना था. उस लड़ाई में मेरी आत्मा बराबर हार जाया करती थी. हार जाने के कारण मुझे बड़ी शर्म और घबड़ाहट हो जाती थी.

जब उस रात को नया मन और नया जीवन मिला तो वह पुरानी दशा दूर हुई. मेरी आत्मा की सब शक्तियों में बड़ी तब्दीली दृष्ट आई. मनुष्य में अन्तःकरण या कानशन्स राज करने के लिये उत्पन्न किई गई. जब वह ठीक हो तो पाप की बुराई और धर्म की भलाई पहिचानी जाती, और वह पाप के करने से मना करती और धर्म के करने में उभाड़ती है. पापही कानशन्स को सिंहासन पर से उतार देता और उसी के कारण वह अपना काम नहीं कर सक्ती है. उस रात को मेरी कानसेन्स फिर गद्दी पर बैठाई गई और उसको नया अधिकार और बल दिया गया. उसी वक्त से वह बहुत सी बातों को मना करने लगी जिनके विषय में वह पहिले चुपही रहती थी. वह उस रात

से बहुत से नये फराइज़ भी प्रगट करने लगी जिन का पूरा करना अवश्य हुआ. उसने हर एक गन्दी चिन्ता और बुरी इच्छा का मना किया. वह लालच को मन में जगह न देती थी. वह अपस्वार्थ और घमंड और सारी आत्मिक और शारीरिक अशुद्धता के विरुद्ध हुई. उसकी अगु-वाई यही थी कि ईश्वर का प्रणाम बराबर किया जाये और कि उसकी इच्छा के अनुसार मनुष्यों की भलाई और मुक्ति के लिये प्रार्थना और परिश्रम होते रहें. कानशन्स के राज में अधिक बल के पाने से कामयाबी भी हुई. गोया कानशन्स को उसके सब कार्य में नये और अच्छे सहायक दिये गये. मेरी बुद्धि को नया और आत्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ था. उस ज्ञान में बड़ी महिमा पाई जाती थी.

उसकी ज्योति में ईश्वर का दर्शन मिला था. वह ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी और पवित्रता और प्रेम से भरा हुआ बूझ आया. ईश्वर के उंजियाले में मैं ने अपनी आत्मा की उत्तमता और उसकी मुक्ति की बड़ाई को पहिचान लिया. यह भी मुझ पर प्रगट हुआ कि वह आत्मिक जीवन जो मसीह से मिलता है कैसा अनमोल है. इन बातों के जानने से मेरी कानशन्स को बड़ी सहायता पहुंची. अनहोना है कि कानशन्स की शक्ति अज्ञानता के अंधियारे में अपना काम करे. पाप की दशा में अंधेरा सदा बना रहता है. नये जीवन के साथ ईश्वर आवश्यकता के अनुसार उंजियाला देने लगता है कि कानशन्स के राज में भलाई और आशीष हो ॥

उसी रात को भी मेरी इच्छा की शक्ति को अद्भुत तब्दीली प्राप्त हुई. पहिले बड़ी घबड़ाहट और डरके कारण मैं ने ईश्वर की इच्छा को ग्रहण किया. मैं ने गोया लाचार होकर मसीह को अपने तईं दे दिया कि उसकी सेवा करूं और पाप के दंड से बचूं. अब मेरी इच्छा की शक्ति प्रभु के हाथ आई तो उसने अद्भुत रीति से उसकी दशा को बदल डाला उसके बड़े अनुग्रह से वह उसी की इच्छा से यहां तक मिलाई गई कि उसी समय से ईश्वर की आज्ञाओं पर चलना बहुतही प्रसन्न हुआ. मुझ में किसी चिन्ता और चाह का पता न रहा कि प्रभु को छोड़कर कोई दूसरा मन और जीवन का हाकिम किया जाये. यही चाह स्थिर हुई कि जो हो सो हो परन्तु ईश्वरही मेरी आत्मा का

राजा बना रहे. जब मेरी इच्छा में ऐसी तब्दीली हुई तो वह भी कानशन्स की बड़ी मददगार बन गई. जब आज्ञाकारी की नियत प्राप्त हो तो कानशन्स का काम सहज हो जाता है. यह नियत उस रात मुझ को मिली ॥

बर्णन किया गया कि उस वक्त ईश्वर का बड़ा प्रेम मन में जारी किया गया. उससे पहिले जगत की बस्तुयें मुझे बड़ी पियारी लगीं और मैं उन्हीं को अपनी मुख्य संपत्ति जानता था. ऐसे संसारिक प्रेम में अपार बुराई और मलीनता है. उस अशुद्ध प्रेम के कारण मैं ईश्वर को किसी रीत से न चाहता था. उस रातको प्रभु ने मेरे प्रेम की बिचारी शक्ति को उठाकर और पवित्र करके नया जीवन दिया. उस वक्त से ईश्वर की गोद प्रेम का घर बनी रही. उसी की संगत से स्वर्ग का सा आनन्द

मिलता है. वही गोद गोया मेरी आत्मा के लिये वैकुंठ ही ठहरी. ईश्वर की गोद उसी रात को मुझे प्राप्त हुई. जब ईश्वर से ऐसी मित्रता और प्रेम हुआ तो उससे कानशन्स को बड़ी सहायता मिली. प्रेम के कारण ईश्वर की इच्छा पर चलना बहुतही सहज हो जाता है. वह प्रेम बराबर कानशन्स को उभाड़ता रहता है कि प्रभु की इच्छा हर प्रकार से मानी जाय. कानशन्स के राज में वह प्रेम बड़ी कामयाबी का कारण होता है ॥

उस रात को मेरी आत्मा प्रभु के राज में पहुंची और तब से वह उसी राज में बास करती है. ईश्वर के राजही में मनुष्यों की कानशन्स अपना काम कर सक्ती है. जब यीशु मसीह से बुद्धि और इच्छा और प्रेम की शक्तियों को ऐसी तब्दीली प्राप्त हो जाये तो

हम पाप के मार्ग पर चलना ग्रहण नहीं कर सकते हैं. प्रभु के राजही में सच्चे धर्म और नेकी की सूरत पूरी रीति पर पाई जाती है ॥



छठवां पर्व्व ॥

पवित्र लड़ाई का जमाना.

नये जन्म में ईश्वर की ओर से मनुष्य की आत्मा को बहुत बड़ी तबदीली तो मिलती है, तो भी वह समय जो जगत में काटा जाता है धार्मिक और आत्मिक लड़ाई का जमाना है. संसार वह खेत है जिस में महा दुष्ट आत्मा अर्थात शैतान पर और हर प्रकार के पाप पर जय-वन्त होना अवश्य है. जो मनुष्य पृथिवी पर कुकर्मी और अपराधी रहते हैं इस लड़ाई में हारही जाते

हैं. वह जो ईश्वर का अनुग्रह और सहायता पा पाकर जीत जाते हैं सो अपनी आत्मा को संभालते और उस के बल को बढ़ाते जाते हैं. धर्म्मियों के लिये यह लड़ाई सिद्धता का मार्ग है. हमारा स्वर्गीय पिता सर्वज्ञानी और प्रेम से परिपूर्ण होकर अपने संतानों के लिये यही रास्ता चुन लेता है. हर प्रकार का पाप हमारी आत्मा का बड़ा शत्रु है और यदि एक एक पर जय प्राप्त न हो तो बिनाश की जोखिम है. जब मैं यीशु पर बिश्वास करके ईश्वर का पुत्र बना तो मुझे ज्ञान न था कि यह लड़ाई आगे होगी और जीवन भर रहेगी. ईश्वर की संगत पाकर यह सोच हुआ कि मैं जीत चुका. पर बहुत जल्द इस लड़ाई का ज्ञान मुझे प्राप्त होने लगा. शैतान हमारी दशा को देखकर हमारी

परीक्षा करता है. कभी वह बातें जिन के द्वारा से वह हमें फंसाने चाहता है बाहर से दृष्टि आती हैं और कभी भीतर पाई जाती हैं. दूसरों की सहायता की आशा से मैं कई एक ऐसी बातें लिख देता हूं ॥

कभी कभी जब शरीर दुर्बल या मांदा हो तो उदासी समा जाती और बड़ी कठिनता से बिश्वास घटने से बचाता है. ऐसी दशा में उसको प्रार्थना करके संभालना है. यदि ईश्वर पर भरोसा स्थिर न रहे तो हार जाने का डर बहुत बड़ा होगा. ऐसी दशा में किसी वक्त प्रार्थना में मन जैसा चाहिये न लगेगा, और बिनती करता रहना कठिन काम है. कठिन हो या सहज हो प्रार्थना करता रहना है, जब तक कि जीतने का तजरिबा प्राप्त न हो, नहीं तो शैतान जयवन्त होगा.

प्रार्थना में ईश्वर की बाट को देखना है कि विश्वास और प्रेम बहाल रहे और बढ़ता जाये ॥

किसी वक्त शैतान संसारिक वस्तुयें ऐसी रीति से दिखाता है कि दृष्टि में आत्मिक बरदानों से अधिक लाभदायक ठहरती हैं. इन आत्मिक बरदानों के साम्हने संसारिक वस्तुयें सचमुच बिलकुल तुच्छ हैं और इस बात को सदा स्मर्ण करना चाहिये. इस बात के विषय में ईश्वर की शिक्षा बहुत साफ़ है और उस शिक्षा को बड़ी दृढ़ता के संग थाम्भे रहना अवश्य है ऐसा न हो कि बैरी जीत जाये ॥

कभी कभी हमारे बिश्वास और प्रेम की परीक्षा के लिये ताकि उनका बल बढ़े ऐसा देख पड़ता है कि प्रभु ने अपना मुख हमारी आत्मा से छिपाये रक्खा है. ऐसी दशा में उसकी

बड़ी प्रतिज्ञा को स्मर्ण करना चाहिये कि मैं तुम्हें न छोड़ूंगा और उसकी बाट को देखना चाहिये कि फिर दर्शन दे. ठीक वक्त पर उसका मुख फिर दृष्टि आवेगा. उसकी इच्छा नहीं है कि उसके सन्तान उसकी संगति से न्यारे रहें. ऐसी परीक्षा में हमारा बड़ा काम यही है कि अपने बिश्वास को स्थिर रक्खें और अपने तईं उसके हाथ में छोड़ दें. मुक्ति के प्राप्त करने में हम अपने तईं ईश्वर के हाथ में सोंप देते हैं कि सदा लों उसी के बने रहें, और किसी परीक्षा में यह उपाय न बदलने पावे. ईश्वर हर प्रकार से बिश्वास योग्य है, और अगर हम उसके बने रहें और बराबर उस पर भरोसा करें तो हमारी आत्मा में मुक्ति का काम किसी दशा में न रुकेगा ॥

कभी कभी इस बात से बड़ी कठिनता होती है कि वह काम जो प्रभु हमको देता भारी बोझ सा देख पड़ता है. उस पर दृष्टि करके बड़ी घबड़ाहट मन में समा जाती है. डर है कि हम ईश्वर को कठोर स्वामी समझने लगें. ऐसी दशा में बड़ी हिम्मत और बहादुरी चाहिये कि मुक्ति का काम न रोका जाये. एक बात सदा मन से मानना अवश्य है, अर्थात कि ईश्वर उस सामर्थ्य से बाहर जो वह हमें देने को तैयार है काम का बोझ हम पर न डालेगा. अनहोना है कि स्वर्गीय पिता जो अपार प्रेम का सोता है अपने निज पुत्रों से अंधेर और अन्याय का काम करे. जब उस काम में जो ऐसा कठिन दृष्टि आये हाथ लगायें तो प्रभु ऐसा अनुग्रह और सहायता देता है कि

यह सहज हो जाता है. इस बात को मैंने कितनी बार परखा और सच पाया. यदि ऐसे काम को हम देखते देखते निराश और बेहिम्मत होजायें तो सचमुच हार जायेंगे. परन्तु अगर हम ईश्वर पर भरोसा रखकर आगे बढ़ने की उसकी इच्छा पर चलें तो वह सेवा पूरी किई जायगी और हम जयवन्त होंगे. ऐसी सेवा का फल बड़ा उत्तम भी पाया जायेगा. कभी ऐसा नहीं होता है कि हमारे लिये ईश्वर का दिया हुआ बोझ अधिक भारी और उसका दिया हुआ बल कम हो ॥

यह तजुर्बा भी आत्मिक जीवन में मिलता है कि शैतान मित्र के भेष पहिने हुये और मित्रता की बातें बोलते हुये आता है कि हमें बहकाये और भरमाये. इसी रीति

से उसने आदम और हव्वा को अदन की बारी में परीक्षा किई और पाप में फंसाया. इस काम में उसको बड़ी कपट और चतुराई है. जब ऐसा हो तो ईश्वर से बिन्ती करके बल और अगुवाई प्राप्त करना अवश्य है और उसका साम्हना करके जीत लेना है. जब हम प्रभु को अपने संग कर रक्खें तो हार न जायेंगे॥

इस जगत में वक्त बवक्त बड़ा दुख और शोक हम सब को मिलता है. कदाचित मृत्यु हमारे किसी मित्र या प्यारे को हम से अलग कर दे, या कोई रोग हमें सताये, या जीवन के बिताने में तंगी हो जाय. ऐसी बातें संसार में अनगिनत हैं. यह दुख का काल है. जब ऐसी बातें हों तो ईश्वर पर पूरा भरोसा रखकर धीरज के साथ उन सब को सहना फर्ज है॥

वह थोड़ेही दिन तक रहेंगी. हमारे प्यारे जो मर गये हम से थोड़ी देर आगे स्वर्गीय घरों में प्रवेश कर गये और हमें फिर जल्द मिलेंगे. जब विश्वास स्थिर रहे तो संसार के सारे दुख भलाई का कारण होंगे. वह भलाई एकाएक दृष्टि न आयेगी, परन्तु जब समय आवे तो वह देखी जायेगी. इन दुःखों से आत्मिक बल बढ़ता जाता है ॥

इस आत्मिक लड़ाई में एक और परीक्षा यह भी है कि शैतान बार बार हमें एकाएक छेड़ता है कि मन में क्रोध या बैर जगह पाये. उसकी इच्छा है कि यह बातें हमारे लिये गिरने का कारण हों. ऐसी दशा में अवश्य है कि बड़ी चौकसी हो और कि ईश्वर से बिन्ती किई जावे ताकि हम अपने बैरी के इस जाल में न फंस जायें॥

मैं जानता हूं कि अधिक विश्वासी लोग विशेष करके लड़ाई के आरंभ में कभी कभी किसी परीक्षा से थोड़ी देर के लिये गिराये भी जाते हैं परन्तु वह सिपाही जिस में पूरी हिम्मत और बहादुरी पाई जाती है लड़ने से हाथ न खींचेगा जबलों कि गिरानेवाला आप हार न जाये. हां, संसारिक लड़ाई में कभी ऐसा होता है कि सब से बलवन्त और बहादुर सिपाही जीत नहीं सकते हैं. परन्तु उस लड़ाई में जो शैतान और पाप से होती है जयवन्त होने की सामर्थ्य हर एक विश्वासी को दिई जाती है. पाप के हर एक मार्ग से हम न्यारे रह सकते हैं. ईश्वर का अनुग्रह बस है॥

मेरे लजारस का इस लड़ाई में औरों के तजरिबे से मिलता है. कभी कभी शैतान जीतने लगा. किसी किसी

वक्त में गिरने से न बचा. परन्तु कभी ऐसा न हुआ कि मैं लड़ने से रह गया जब लों कि शैतानही न हार गया और मैं जयवन्त न हुआ. जब एक बार अचेत होकर मैं गिराया गया तो उससे ऐसा चौकस किया गया कि उस परीक्षा से मैं बचा रहता था. लोमड़ी सीखती है कि दो बार जाल में नहीं फंसती. उस रात से अब नया जन्म मिला मैं जान बूझकर और अपनी इच्छा से किसी पाप के मार्ग में नहीं गया. नये मसीही शिष्यों के गिरने का मुख्य कारण यही है कि आरम्भ में आत्मिक ज्ञान की कमी है. इस लड़ाई में तजरिबे के पाने से शैतान की चतुराई और मक्कारी जानी जाती है. पाप करने की आदत से विशेष करके बचा रहना अवश्य है. जब किसी पाप की आदत हुई तो

शैतान जीत चुका. इस बात से मुझे बड़ी शांति और आनन्द है कि उस रात के पीछे जब कि वह तब्दीली मिली पहिचाने हुये पापों के ग्रहण करने से प्रभु ने अपने बड़े अनुग्रह और प्रेम के कारण मुझे बचाये रक्खा. हां, शरीर में रहते हुये तो हर एक मनुष्य भूलचूक अवश्य करेगा, क्योंकि यह जीवन बालकई का ठहरता है और इस जगत में रहते हुये अज्ञानता से पूरा छुटकारा नहीं मिल सकता है. इस संसार में हम सब शिष्य या सीखनेहारे हैं. अनहोना है कि शिष्य एकाएक गुरू के बराबर हो जावे. कारीगर की नाईं सीखने-वाले का हाथ काम में नहीं बैठ सक्ता है. भूलचूक में साक्षी नहीं है कि प्रेम में कमी है. जब छोटा बालक बर्त्तन में प्रेम के कारण माता पिता के पास

पानी ले जाते हुवे उस में से कुछ गिरा दे तो उसे देखकर कोई न सोचेगा कि उसका पियार पूरा न था. उम्र और बल की कमी के कारण पानी गिराया गया. इस संसार में सब धर्मियों की यही दशा रहती है. ईश्वर मन के प्रेमही को देखता है. जब बैकुण्ठ में सियानपन और पूरी सामर्थ्य प्राप्त हो जाये ऐसी कमी की बातें भी न रहेंगी. ऐसी भूलचूकें मुझ से बहुतायत के साथ होती चली आई हैं और कितनी बार शोक और पछतावा के कारण हुई. मैं उनको प्रभु के पास ला लाकर क्षमा भी मांगता आया, और उसने बिनती सुनकर सब को क्षमाभी किया. मनकी उस लव्लीली के दिन से बराबर यही इच्छा और इरादा हुआ कि जहां लों ज्ञान और समझ हो ईश्वर ही की इच्छा हर बात

में पूरी की जावे. हर प्रकार की बुराई से घिन और विरुद्धता स्थिर रही और बढ़ती गई. उसी रात को गोया सच्चे धर्म और पवित्रताई की दशा मेरा निजदेश हुई और उसीकी वस्तुयें और बरदाम मेरे लिये बस ठहरे. जान बूझकर पाप के देश की सम्पत्ति से मेरा कोई काम न रहा. यह बड़ी तब्दीली ईश्वर के अनुग्रह से और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हुई. ईश्वर ही की स्तुति और बड़ाई हो ॥

—o—

सातवां पर्व्व ॥

मनुष्यों से प्रेम रखना.

जब उस रात मेरी आत्मा को ऐसी अद्भुत तब्दीली प्राप्त हुई तो मनुष्यों से नया और बहुत बड़ा प्रेम जारी किया गया. आत्मिक और

स्वर्गीय जीवन के संग यह ज्ञान भी दिया गया कि सकल संसार के मनुष्यों को वही मुक्ति जिसे मैं ने प्राप्त किया था मिल सकती है. उसकी एक सी आवश्यक्ता भी सब को होती है. यदि ईश्वर ऐसी मुक्ति के देने में किसी के विषय में पक्षपात करता तो यह बरदान मुझ को कभी न मिलता. मुझ में कोई बात न थी जिससे ईश्वर मुझे बचाये और दूसरों को पाप में छोड़ दे. उसी वक्त मुझ में बड़ी चिन्ता और चाह उत्पन्न हुई कि सारे जगत के लोग भी इसी जीवन और आनन्द और बड़ी सम्पत्ति में मेरे संग भागी हो जायें. इस बात के ज्ञान से कि बहुत थोड़े मनुष्य हैं जो इस तज-रिबे को जानते हैं हृदय में बड़ी उदासी और दुख पहुंचा. मुझे अचम्भा की बात है कि उस वक्त एकाएक सारे

जगत के लोगों के लिये ऐसी चिन्ता और प्रेम मन में समा गया वह मुझ में हर प्रकार से नई बात थी. कुछ संदेह नहीं कि वह भी ईश्वर की ओर से मुझ को दिया गया. मैं ऐसे प्रेम की राह न देखता था. उस वक्त से पहिले मैं चैन और सुख और कितनी वस्तुयें अपनेही लिये चाहता था और दूसरों की चिन्ता न करता था. मुझ में संसारिक पदार्थों से बड़ा प्रेम था और मैं धनवान होने का बड़ा अभि-लाषी था जब मुक्ति के विषय में मैं सोचता भी था तो केवल अपनी ही भलाई के लिये उसे प्राप्त करने की चिन्ता होती थी. विचार यही था कि किसी वक्त मरने से पहिले उस को प्राप्त कर लूंगा कि नर्क में पाप के दण्ड से बचा रहूं. कुछ भी चिन्ता न थी कि मैं पापमोचन और पवित्र

मन पा लूं ताकि दूसरों की सहायता करूं कि वह भी बचाये जायें. मुझ में अपस्वार्थही का राज था पाप के जीवन में यही दशा सदा पाई जाती है. केवल अपनेही लिये चिन्ता और उपाय किया जाता है जब ईश्वर से नया जन्म और और आत्मिक जीवन मिलता है तो इस बात के विषय में अद्भुत तब्दीली होती है. उस तब्दीली को पाकर मैं जान गया कि ईश्वर की इच्छा हर प्रकार से और है. वह मुक्ति के पाये हुओं के द्वारा से दूसरों को खिचवाने चाहता है कि वह भी बचाये जायें. जब हम पाप से बच कर ईश्वर के मित्र बनें तो अपने मन में भी यही चिन्ता और बड़ी चाह पाते हैं. जब किसी में ऐसी लालसा उत्पन्न हो जाये तो वह दूसरों की भलाई के वास्ते प्रभु से बिन्ती भी

करेगा और उनके बचाने के काम में हाथ लगायेगा. जब तक किसी में अपस्वार्थ बनी रहे तो प्रगट है कि उसको आत्मिक जीवन न मिला और वह ईश्वर से दूर है. जब वह दशा प्राप्त हो जिसमें हम दूसरों की मुक्ति के लिये चिन्ता और प्रार्थना करें और प्रभु के संग उनके बचाने के काम में भागी हो जायें तबही हम धन्य हैं. अपने संतानों के द्वारा से ईश्वर जगत के लोगों पर अपनी महिमा और अपार प्रेम को प्रगट कर देता है. हर एक को जो पाप से बचाया जाये इस बड़े काम में जगह और भाग दिया जाता है. जो कोई अपनेही लिये जीने चाहे प्रभु की संगत न पावेगा. ईश्वर अपने मित्रों के मन में दूसरों से अपना सा प्रेम जारी कर देता है. जब दूसरों से सच्चा प्रेम

हो तो अनहोना है कि उनकी मुक्ति की चिन्ता न किई जाये. उसी रात से मैं ऐसी चिन्ता और चाह औरों के विषय में जानने लगा. थोड़े दिनों के पीछे मेरे मन में बड़ी सफाई के साथ यही साक्षी आई कि प्रभु तुझे बुलाता है कि उपदेशक के काम में अपने जीवन को काटे. मुझे ज्ञान था कि ऐसा काम बहुतही कठिन है और कि ऐसी सेवा में संसारिक और शारीरिक चैन कम मिलेगा. अगर कोई इसी विचार से इस काम को ग्रहण करें कि शरीर पले और जगत में सुख मिले तो बड़ा अयोग्य काम किया गया. संसारिक लाभ की आशा से आत्मिक और धर्मिक सेवा में प्रवेश करना पाप भी ठहरता है. ऐसे मनुष्य पर ईश्वर की आशीष न होगी. जब मनुष्य देह की भलाई के लिये

इस काम में हाथ लगाये तो दूसरों की मुक्ति की चिन्ता और चाह कम करेगा और उसकी सेवा में अवश्य ढीलापन और बेकली होगी किसी मनुष्य का अधिकार नहीं है कि अपने लिये ऐसी आत्मिक सेवा चुन ले. जो खिन बुलाये उसमें हाथ लगाये ईश्वर की ओर से धन्य न होगा. ऐसे सेवकों का चुननेहारा प्रभु आपही है जब किसी में ईश्वर का पूरा प्रेम हो और वह मनुष्यों को भी जैसा चाहिये पियार करता तो धन्य वह जब इस बड़ी सेवा के लिये बुलाया जावे और उसको ग्रहण करके विश्वास योग्यता और सरगर्मी के साथ उसमें अपना जीवन काटता जाये. इस बड़ी सेवा में उत्तम अवसर मिलता है कि मनुष्यों के बचाने में सहायता करे. इस काम में उपाय तो है कि उप-

देशक पाला जाये ताकि अपना सारा वक्त वह शिक्षा देने और ईश्वर के लिये लोगों के उभाड़ने में बिताये. यह सेवा जब कि भली भांति किई जाये ऐसी भारी है कि और कामों के लिये समय नहीं होता है. बटे हुये जीवन में फलदारी कम मिलेगी. इस सेवा का आत्मिक और स्वर्गीय बदला है कोई सच्चा धर्मी संसारिक लाभ की आशा से इस काम में हाथ न डालेगा एक और बात स्मरण करने के योग्य है, अर्थात कि न केवल उपदेशक और आत्मिक अगुवा लोगों के बचाने की सेवा में ईश्वर के संग भागी हैं सब मनुष्य जो ईश्वर को जानते और उसको पियार करते हैं इस उसके काम में हिस्सेदार और सहायक होते हैं वही विश्वासी जो दूसरों की मुक्ति की लालसा के कारण उनके

लिये चिन्ता और परिश्रम करते जायें
तो अपने आत्मिक जीवन में अधिक
बढ़ती पायेंगे इसी मार्ग में हर एक
धर्मी के लिये बड़ाई और आदर की
सूरत है ईश्वर चाहता है कि उसके
सन्तान आत्मा में बहुत बढ़ें और
आदर के योग्य हो जायें जबलों दूसरों
की भलाई और मुक्ति के लिये चिन्ता
और चिन्ता और परिश्रम किया जावे
तो इस बात में प्रभु की इच्छा पूरी हो
सकती है वह जन जो केवल अपने ही
लिये जीते आत्मा में छोटा होगा और
घटने का तजरिबा पावेगा अब
अपने बुढ़ापे में मुझे बड़ा आनन्द
है कि ईश्वर की इच्छा के अनुसार
मैं ने इस आत्मिक सेवा को ग्रहण
किया और मनुष्यों के बचाने के काम
में अपने जीवन को बिताया. मैं ने
इस बड़े काम में मुख्य रीति से ईश्वर

की संगति पाई और मुझे आशा है कि मेरे द्वारा से बहुत से लोगों ने प्रभु से मेल और मित्रता प्राप्त किई हर एक मनुष्य जो इस सारी सेवा में सहायता करे और दूसरों की भलाई का कारण हो जाये धन्य है ॥

आठवां पर्व्व ॥

मत और धर्म का स्वभाव.

उस रात की आत्मिक तब्दीली से मैं ने नई रीति से ज्ञान पाया कि मत मत का मूल और उत्तमता क्या है और कि सच्चे धर्मी होने से क्या अर्थ है. पहिले मैं ने उसी को धर्मी जाना जो सत मत की शिक्षा को ग्रहण कर ले, और उसकी रीतियों पर चला करे, और प्रगट में ईश्वर का प्रणाम करनेहारा हो. ईश्वर की

व्यवस्था की आज्ञाओं के विषय
में मैं ने यह बात सोची कि वह
सिपाहियों की नाईं हैं जो मार्ग की
दोनों ओर सफ बांधे हुये खड़े
हैं एक सफ के सिपाही कितने
कामों को मना कर रहे हैं, कि
इनको न करना. और यदि करो
तो भारी दण्ड पाओगे. दूसरी ओर
के बताते जाते हैं कि यह करना
और वह करना, और दोनों सफों के
अपने अपने हथियार दिखा दिखा
कर धमकी और घुड़की देते हैं कि
लोग उन से डरें और अपने फर्ज़ को
पूरा करते जायें मैं ने यह भी समझा
कि अगर मत की सारी रीतें और
पूजा पाठ की सारी बातें और
व्यवस्था की सारी आज्ञायें मानी
जायें तो इस जीवन के पीछे स्वर्ग
में बड़ा बदला मिलेगा, और कि

उस बदले में ऐसी वस्तुयें प्राप्त होंगी कि सुख और आनन्द पूरा होगा. जब उस रात को वह नया और स्वर्गीय जीवन मिला तो मैं ने भली भांति पहिचाना कि ऐसे विचार बहुत कच्चे हैं और कि सच्चे मत और धर्म के मार्ग में जो दशा मिलती है सो हर प्रकार से दूसरी और अधिक प्रसन्न होती है. हां, सच मत का ज्ञान तो है जैसे ग्रहण करना अवश्य है. नाना प्रकार की रीतें भी हैं जिन को मानना फर्ज है व्यवस्था भी दी गई है जो बड़ी आदर योग्य ठहरती है और जिसकी आज्ञाओं पर चलना होता है. प्रगट में ईश्वर का प्रणाम करने हारा होना भी अवश्य है यह सब बातें अपनी जगह में भली ठहरती हैं परन्तु सच्चा धर्मी और भक्त होना दूसरी बात है. इन बातों में

सत मत का मूल काम पूरा नहीं होता. उस रात की तब्दीली से यह ज्ञान मिला कि सत मत एक द्वारा है जिस से शरीर में रहते हुये मनुष्य ईश्वर का दर्शन पाकर उसकी संगत में अपने जीवन को बितावें. ईश्वर से ऐसी संगत और मित्रता को प्राप्त कर लेना सच्चे धार्मिक का होना और आत्मिक जीवन का पाना है. यह ईश्वरीय और स्वर्गीय जीवन सत मत का इज़हार है, यह वही जीवन है जिसका वर्णन इस पोथी में किया जाता है. उस से तीन बहुत बड़ी बातें हैं जो बड़े विचार के योग्य हैं ॥

१. इस नये और आत्मिक जीवन में ईश्वर की सच्ची पहिचान मिलती है. यह ईश्वरीय ज्ञान ईश्वर के दर्शन और संगत से प्राप्त होता है. यह तजरिबे का ज्ञान होता है, और ऐसा

ज्ञान सब से उत्तम है. तजरिबे के ज्ञान में ऐसी सफाई और सच्चाई पाई जाती है कि उस के विषय में संदेह जगह नहीं पा सकता है सुनी सुनाई बातों का ज्ञान दूसरे प्रकार का होता है. हम सर्दी गर्मी, भूख पियास, उंजियाला अंधियारा, सुख दुख इत्यादि की पहिचान तजरिबे से पाते हैं. जब बुद्धि ठीक हो तो सब मनुष्य मानते हैं कि ऐसी वस्तुयें या ऐसी दशायें संसार में मिलती हैं और उनका इनकार करना मूर्खता ठहराता है. जब प्रभु के द्वारा से नया जन्म और नया जीवन मिले तो मनुष्य का मन ईश्वर का घर हो जाता है और उस में उसकी हाजिरी और दर्शन पाया जाता है. पिता पुत्र की सी संगत हो जाती है. जीवन के दिन ऐसी संगत में बिताये जाते हैं. जब ईश्वर से ऐसी

मंगल बनी रहे तो उसके होने के विषय में संदेह करना अनहोना है. उसकी शक्ति और पवित्रता और प्रेम की अद्भुत महिमा को देखते हुये कोई सोच नहीं सकता कि ईश्वर में कमी हो. देखनेहारे सूर्य को अंधेरा नहीं मान सकते हैं. ईश्वर की ऐसी संगत और मित्रता इस पर मनुष्य प्राप्त कर सकता है और उसके होने और महिमा का ज्ञान सब को मिल सकता है इसी मार्ग से सब मत की बड़ाई और आत्म तृप्ति आता है ॥

८. नया और आत्मिक जन्म और जीवन को पाकर मनुष्य की इच्छा ईश्वर की इच्छा को ग्रहण करती और उस से पूरा मेल हो जाता है. हां, आरम्भ में ईश्वर की इच्छा के आधीन हो जाना मुझे बहुतही कठिन काम तो हुआ, पर यह दशा जल्द दूर हुई.

यह कठिनता आत्मिक जीवन केपाने से पहिले थी. अब नये जन्म के पाने से मैं ईश्वर का निज पुत्र बना तो उसकी इच्छा बड़ी पियारी हो गई. इसी मार्ग में ईश्वर की और मेरी इच्छा में एकता हुई. ईश्वर को छोड़ कोई नहीं मिलता जो इस योग्य है कि सब बातों में और सदा लों उसकी इच्छा ग्रहण की जाये पर ईश्वरसर्वज्ञानी और सर्वशक्तिमान और पवित्रताई और प्रेम से परिपूर्ण होकर ऐसा योग्य है कि हर एक मनुष्य बड़े आनन्द के संग उसके आधीन हो सके और ऐसी आधीनता सब पर फर्ज है उस इच्छा में अपार महिमा पाई जाती है. उसकी सम्पत्ति में मनुष्यों की भलाई और कुशलता की सारी वस्तुयें बहुतायत के साथ पाई जाती हैं. उस इच्छा के

भीतर गोया सारे योग्य और लाभ-दायक कामों के लिये जगह बहुत है. वह हमारे जीवन की आशीषों और सुकर्मों के लिये गोया ऐसी लम्बी चौड़ी है जैसा सूर्य और चन्द्रमा और तारों के वास्ते आकाश लम्बा चौड़ा है. किसी भली वस्तु या काम के लिये ईश्वर की इच्छा से बाहर जाने की कुछ भी आवश्यक्ता नहीं है. सारा जीवन पूरे चैन और आनन्द के संग उस इच्छा के भीतर बीत सकता है. जब ईश्वर की इच्छा हमको किसी वस्तु के लेने या किसी काम के करने से रोकती है तो कारण यह है कि हानि और बिनाश का डर है पिता होकर वह प्रेम के कारण हमें हानि और बिनाश से बचाने चाहता है. पहिले मैं इस बात के दबाव के कारण कि पाप का दण्ड बिनाश होगा ईश्वर

की इच्छा का आधीन हुआ. परन्तु जब नया और आत्मिक जीवन मिला तो मैं उस इच्छा को बड़ा प्रसन्न योग्य पाया और ज्यों ज्यों यह जीवन बढ़ता गया त्यों त्यों वह इच्छा बहुमूल्य और प्रिय होती गई. उसकी उत्तमता और महिमा अद्भुत दृष्टि आती है. ईश्वर की इच्छा धर्मियों का निज देश गोया ठहरती है जिस में उनकी आत्मा का आराम होता है और जिस में उनका सुख और आनन्द परिपूर्ण है. धर्मी मनुष्य की इच्छा उसके सारे कामों में ईश्वर का ठहराया हुआ वज़ीर या प्रधान है. जब यह वज़ीर अपने प्रभु की इच्छा पर चले तबही उसका सारा काम ठीक होगा ईश्वरीय इच्छा से बाहर जाने की आज्ञा नहीं है. उस इच्छा की हद्दों के भीतर हमारे लिये जगह और

काम बस है. ईश्वर के आगे ऐसी आधीनता में सच्चे धर्म की नेव और मूल है. उसी आधीनता की दशा में सतमत का फल दृष्टि आता है ॥

३ जब नया और आत्मिक जीवन प्राप्त हो तो ईश्वर के निज पुत्र होकर हमारी आत्मा में स्वर्गीय पिता से पुत्र का सा बड़ा प्रेम जारी होगा. उस आत्मिक जीवन का मुख्य गुण प्रेम ही है. ईश्वर प्रेम है, और उसके निज पुत्र अपने पिता की नाईं होंगे. पवित्र प्रेम गोया आत्मिक जीवन का जीवन है. जब प्रेम पूरा हो तो उसी के कारण आत्मिक और धार्मिक जीवन के और बड़े गुण भी उत्तम और लाभदायक होते हैं. संगत पाकर ईश्वर के दर्शन और पहिचान का पाना इसी कारण बहुत बड़ी बात है कि वह हमारी आत्मा का प्यारा

होगया है. जब प्रेम न हो न हम उसको पहिचान सकते और न उस की पहिचान की अधिक चाह हो सके. प्रेमही हमारी आत्मा को उभाड़ता रहता है कि ईश्वर की पूरी संगति हो और कि उसका अधिक ज्ञान प्राप्त होता जाये. कितने लोग ईश्वर के ज्ञान के सीखने में निश्चिन्त और सुस्त होते हैं और कारण यही है कि उनमें प्रेम की कमी है. जहां प्रेम पूरा हो तो अवश्य बड़ी चाह और चिन्ता होगी कि ईश्वर के गुण और उनकी महिमा जाने जायें. जब ईश्वर का दर्शन और साफ होता जाये और उससे संगति बढ़े तो प्रेम भी तरक्की पाता जायेगा. प्रेम ही के कारण भी ईश्वर के आधीन होजाना सहज होता है. प्यार करनेहारे चाहते ही हैं कि ईश्वर की अकेली इच्छा

पूरी की जाये जबही ईश्वर की इच्छा से बिरुद्धता हो तो साफ प्रगट है कि उससे प्रेम की कमी है. प्रेम की दशा में ईश्वर की इच्छा की पाबन्दी पूरी निर्बन्धता ठहरती है. प्रेमही के मार्ग में प्रभु का जुआ सहज और उसका बोझ हलका है. जब प्रेम पूरा हो तो ईश्वर की सारी आज्ञायें हर प्रकार से ग्रहण योग्य ठहरती हैं और उनमें से कोई भी भारी नहीं है. प्रेम करना ईश्वर की व्यवस्था को पूरा करना है. प्रेम ईश्वर के आगे आज्ञाकारी करेगा और अनहोना है कि प्रेम पड़ोसियों की बुराई करे प्रेम अपने प्रभुही का राज चाहेगा और जान बूझ कर कोई काम न करेगा जिससे उसकी इच्छा टल जाये. प्रेम के लिये ईश्वर की गोदही बैकुंठ ठहरती है और वह उस की संगति में

आनन्द और कुशलता की सारी वस्तुयें पाता है. ऐसे प्रेम के आगे इस संसार की सम्पत्ति और धन तुच्छ और नाचीज़ है सृष्टि में कोई पदार्थ नहीं है जो पियार करनेहारी आत्मा को ईश्वर से अलग कर सके. जब प्रेम हो तो ईश्वर ही में पूरी मेरी मिलती है. जब हम इसी रीति से ईश्वर की पहिचान प्राप्त करें और उसके आधीन हो जायें और प्रेम के मार्ग में उसके साथ साथ चलें तो हम जानेंगे कि मनुष्यों की कुशलता और भलाई के लिये कैसा उत्तम उपाय किया गया है। इन्हीं बातों में मुक्ति का बयान और पहिला फल मिलता है. परलोक में इस मुक्ति की पूरी फसल हमें दी जायेगी, पर उस में यह तीन बड़ी बातें पाई जायेंगी अर्थात ईश्वर की पहिचान, ईश्वर का राज

और ईश्वर का प्रेम. उस मनुष्य के लिये जिसने मुक्ति पाई सारी सृष्टि ईश्वर की महिमा से भरपूर पाई जाती है. वह हर जगह में अपना स्वर्गीय पिता हाजिर पाकर उस से संगति प्राप्त करेगा. जब ईश्वर से ऐसा प्रेम और मित्रता हो मनुष्यों से भी प्रेम होगा ईश्वर और मनुष्य के प्रेम में ऐसा मेल है कि उन्हें अलग करना अनहोना है जब किसी को यह आत्मिक और अद्भुत जीवन मिले तो वह समझ लेगा कि ऐसाही जीवन सब के लिये है. यदि पाप और उस की मलीनता से छुटकारा प्राप्त हो तो सब मनुष्य ईश्वर की मुख्य संगति और उस संगति से बड़ा दर्जा और आदर पा सकते हैं. बैबल की यह शिक्षा है कि सब जो पवित्र और धर्मी बनें ईश्वर के घर में याजक

और राजा होंगे. अर्थ यह है कि यह सब ईश्वर की महिमा में भागी होंगे और उसकी बड़ी सेवा करेंगे. ऐसी बड़ाई और कुशलता के पाने से पाप ही केवल रोक सकता है. ईश्वर सब को सन्तानों की नाईं पियार करता है और मसीह ने सब के लिये मृत्यु का स्वाद चखा. इसी दशा में जब किसी को यह आत्मिक जीवन मिले और ईश्वर से मेल हो तो वह सब मनुष्यों से भी प्रेम रक्खेगा और सब के लिये चिन्ता और बिन्ती करेगा ॥

जब हम इसी तरह पवित्र और धर्मी बनें तो सतमत की शिक्षा और रीतों और व्यवस्था की आज्ञाओं में अद्भुत उत्तमता और बड़ाई दृष्टि आती है. उस शिक्षा की ज्योति में ईश्वर और आत्मिक बस्तुओं की महिमा देखी जाती है. ऐसी रीतियों

में आत्मिक पदार्थों की परछाईं मिलती है जिस से वह भली भांति जाने जायें और उनसे पूरी सहायता और सामर्थ प्राप्त हो धर्मी लोग ईश्वर की बन्दगी और प्रणाम के लिये वक्त बवक्त एकट्ठा हुआ करते हैं कि उस की अधिक निकटता प्राप्त हो और कि संगति का तजरिबा बढ़ता जाये ऐसे आत्मिक जीवन में व्यवस्था की आज्ञायें कठोर सिपाहियों के समान नहीं हैं जो हमें डरा डराकर रोकते हैं कि हम अपनी इच्छा को पूरा न करें, परन्तु वह प्रिय मित्रों और अगुवाओं की नाईं हैं जिनके सीखने और समझने से हम अपनी कम उमरी और अज्ञानता की दशा में हानी और मृत्यु और बिनाश के मार्गों में न जायें. ईश्वर के सन्तान तो व्यवस्था के नहीं, परन्तु अनुग्रह के आधीन हैं

तथापि इस लड़काई के जीवन में ऐसी आज्ञायें अवश्य हैं कि उन के द्वारा से शिक्षा और अगुवाई प्राप्त हो. यह नया जीवन और सच्चा धर्म पाकर हम सचमुच निर्बन्धता का तर्जिआ प्राप्त करते हैं वह सच्चाई और ज्ञान और प्रेम की निर्बन्धता है इसको पाकर ईश्वर की इच्छा बड़ी प्रसन्न योग्य और पियारी ठहरती है. उस पर चलते हुये दासता और कैद की दशा नहीं जानी जाती वरंच आनन्द के संग ईश्वर ही का मार्ग ग्रहण किया जाता और किसी दूसरे को चुन लेना अनहोना है. मैं ने यह नया और आत्मिक जीवन पाकर मत-मत और धर्मकी उत्तमता और महिमा को देख लिया है, और इसी आशा से उस का बर्णन लिखता हूं कि दूसरों को भी वही आशीश और आनन्द

प्राप्त हो. यह छिपादगाना प्रेम को पाती है ॥

---o---

नवां पर्व ॥

आत्मिक जीवन और जगत का काम काज.

मन की तब्दीली और वह नया जीवन मुझ को ऐसे समय में प्राप्त हुआ जब मैं संसारिक काम काज में लगा रहता था. दिन बदिन परिश्रम पूरा था. कई एक बरस के पीछे मैं ने उस पुराने काम को छोड़ दिया कि मसीह के लिये उपदेशी बनूं. उस अर्से में जब शरीर जगत के काम में लगा रहा तो मेरी आत्मा ने समय और अवसर पाया कि ईश्वर का प्रणाम और सेवा करती जाये. किसी संसारिक पेशे या सेवा में मनुष्य को

आत्मा की सारी शक्ति काम नहीं आती है. जब शरीर जगत का काम काज करता जाये तो आत्मा ईश्वर की संगति में रहती हुई उसको प्रणाम कर सक्ती है. हनूक हमारे समान मनुष्य था और अपने घराने को उसने पाला और अपने बाल बच्चों को खिलाया, तो भी उसके विषय में लिखा है कि ईश्वर से ऐसी संगति रखी कि तीन सौ बरस लों वह उसके संग संग चला तब ईश्वर ने उसको जीते हुये स्वर्ग पर उठा लिया. यूसुफ और मूसा और समूएल और दानिएल इत्यादि अपने अपने देश के राज में बड़ा पद रखते थे, और उनका काम बहुत ही भारी था, तथापि उन्हों ने ईश्वर से ऐसी संगति और मित्रता प्राप्त किई कि सारे जगत के लोगों के लिये वह बड़े अच्छे नमूने बने. मेरे

उन दिनों में जब संसारिक कामों से हाथ भरे रहते थे मैं ने काम करते हुये प्रार्थना में प्रभु से बड़ी निकटता और संगति पाई न केवल काम के वक्त ऐसा अवसर मिला, पर चैन के वक्त भी मैं पुस्तकों को बड़े ध्यान के साथ पढ़ता गया और धार्मिक और आत्मिक शिक्षा सीखता गया. मैं ने जैसा अवसर मिल सका दूसरों की सहायता के लिये चिन्ता और काम भी किया. कितनों को यह सोच है कि वही मनुष्य ईश्वर का दर्शन पा सकें और उसकी सेवा कर सकें जो संसारिक काम काज को बिलकुल छोड़ही दें और गोया बनवासी बन बैठें. ऐसा बिचार बड़ी भूल की बात है. सब को ईश्वर से संगति रखने की आवश्यक्ता है. इसके बिना जीवन बेफल रहता है. मनुष्य

पशु नहीं है कि केवल देह के प्रति-
पालन की चिन्ता और उपाय हो.
तथापि शरीर को पालना और
संभालना है यदि सब मनुष्य बनबासी
हो जाते तो संसार के सारे लोग
भूखों मर जाते और जगत वीरान
और सूनसान होजाती. संसारिक काम
काज को चला चला कर मनुष्य सच्चे
भक्त और धर्मी भी हो सक्ते हैं. यह
दोनों बातें अवश्य हैं वह मनुष्य जो
अपने संसारिक काम में ईश्वर की सेवा
और प्रणाम नहीं करते इसी कारण
से नहीं करते कि ईश्वर से प्रेम और
मित्रता प्राप्त न हुई. जब जगत की
बस्तुओं का लालच हो और उन्हीं
को कोई पियार करे तो ईश्वर की
संगति के लिये समय न मिलेगा.
समय और अवसर पाना या न पाना
प्रेमही की बात है. जहां आदमी

का धन है, तहां उसका मन लगा रहेगा. जब ईश्वर ही हमारी आत्मा का अधिकार है तो जो काम हो या न हो हम अपने जीवन को उसी के साथ साथ काटेंगे पूरा प्रेम ऐसी संगति से हमें रुकने न देगा. कितनाही परिश्रम क्यों न हो ईश्वर ऐसी आत्मा में अपनी जगह पायेगा. हर एक पेशे और हर प्रकार की सेवा में समय आवश्यक्ता के अनुसार खाने और सोने इत्यादि के वास्ते लिया जाता है, नहीं तो मनुष्य नहीं जी सकते हैं. अपनी आत्मा की भलाई और मुक्ति के लिये भी सब के सब वक्त ले सक्ते हैं. यह बिचार कि जो आदमी संसारिक पेशों और कामों में फंसे हुये हैं ईश्वर को नहीं जान सक्ते और उसकी सेवा और प्रणाम पूरी रीति

से नहीं कर सक्के हैं शैतान की ओर से होगा. जब किसी काम या पेशे में सच्चाई और नेकचलनी हो ईश्वर का दर्शन और संगति हर एक को मिल सक्की है. मुक्ति और उसके सारे बरदान और आशीषें सूर्य्य की ज्योति की नाईं सब के लिये हैं. तजरिबे के द्वारा यह मुझे प्राप्त हुआ और यह विद्या हर एक मनुष्य को मिल सक्की है ॥

---o---

दसवां पर्व्व ॥

आत्मिक जीवन की रक्षा और बढ़ाव.

जब मनुष्यों को ऐसी आत्मिक तब्दीली मिले तो वह यीशु मसीह के शिष्य हो जाते हैं. शिष्य का मुख्य काम सीखना है. धर्म्मियों के लिये यह

संसार पाठशाला के समान है. प्रभु आप सच्चा गुरू है. उसके चेले उस के साथ रहते हुये सीखते हैं. हमारा सारा जीवन इस पाठशाले ही में काटा जाता है. एक बहुत बड़ी बात जिसको सीखना अवश्य है सो यही है कि आत्मिक जीवन कैसे बिताया जावे कि उसको हानि न पहुंचे और कि वह बढ़ता जाये. रक्षा करने और पालने के बिना किसी प्रकार का जीवन हानि से नहीं बचता और न वह बढ़ता है. एक और बात यह भी है, कि जैसा जीवन बड़े दर्जे का हो तैसाही उसकी अधिक चिन्ता करना अवश्य होता और उसका पालना अधिक कठिन पाया जाता है. पशुओं का जीवन ऐसा है कि उस का प्रतिपालन करना बहुत सहज

है वह वस्त्र और घर के बिना भली भांति गुजर करते और उनका भोजन बहुत मोटा होता है. मनुष्य के शरीर के लिये बड़ा परिश्रम करना होता है कि आवश्यकता की वस्तुयें प्राप्त हुआ करें. ईश्वर की सारी कारीगरी में मनुष्य की आत्मायें सब से उत्तम और बड़ी हैं आत्माओं का सच्चा जीवन अद्भुत है. ऐसे जीवन का रक्षा और प्रतिपालन करना बहुतही भारी काम है उससे आदमियों को कोई बड़ा काम नहीं दिया गया. हां एक रीति से ईश्वर आप अकेला आत्माओं का रक्षक और पालनेहारा है. परन्तु वह हम को इस काम में यहां लों अपना भागी कर लेता है कि हम बड़ी कठिनता से अपने फर्जों को पूरा कर देते हैं. शरीर के लिये भी वह सारी

बस्तुयें जो खाने में आती हैं ईश्वर की ओर से हैं, तथापि किसान को बड़ा परिश्रम करना अवश्य है कि गोया ईश्वर को देने का अवसर मिले. इसी रीति से आत्मिक भोजन का देनेहारा ईश्वर ही है, पर कई एक शर्तें हैं जिन को पूरा करके हम उससे ले सक्ते हैं. आत्मा की रक्षा और प्रतिपालन में धर्म्मी आदमी ईश्वर से मिलकर काम करते हैं. इस भारी सेवा में बड़ी सच्चाई और हिम्मत और सरगर्मी अवश्य है. ऐसे काम में बड़ी बुद्धि और समझ भी चाहिये. हर एक मनुष्य को अपनी ही आत्मा की रक्षा और प्रतिपालन के लिये चिन्ता और परिश्रम करना होता है. यह बड़ा काम हम एक दूसरे के लिये नहीं कर सक्ते हैं. हां. हम आवश्यक्ता के अनुसार कदाचित उस मार्ग को दिखा

सकें जिस में आत्मिक भोजन और वस्त्र और घर इत्यादि मिलें, पर उस मार्ग पर चलना हर एक को अपना ही काम ठहरता है. जो कोई उस पर चलने से मना करे उन आत्मिक वस्तुओं के पाने से खाली हाथ रहेगा. इसी बात में हर एक धर्म्मी अपनी ही आत्मा का रक्षक और पालनेहारा होता है जब वह मनुष्य जिसने नया और आत्मिक जीवन को प्राप्त किया ईश्वर का ठहराया हुआ काम करे तो प्रभु के अनुग्रह से वह जीवन अवश्य कुशल क्षेम रहेगा और बढ़ तो जायगा. वह शरीर जो चंगा हो और भलीभांति पाला जाये आपही आप बढ़ता जायेगा. इसी रीति से जब आत्मा की दशा ठीक हो और उसको प्रभु की संगति जैसा कि चाहिये प्राप्त होती जाये तो वह भी बराबर

बढ़ती जायेगी. मैं ने अपने तजरिबे में तीन बड़ी और मुख्य बातें पाईं जिन से आत्मिक जीवन बहाल रहता और अधिक होता जाता है. वह बातें यही हैं, अर्थात पहिली, बैबल का काम में लाना. दूसरी, प्रार्थना में लगा रहना. तीसरी, दूसरों के लिये ऐसी सेवा करना जिस से वह भी मुक्ति पायें. इन तीन बातों को खोलके लिख देता हूं.

१. बैबल को काम में लाना. बैबल ईश्वर की ओर से मनुष्यों को मिली. वह इसी कारण दी गई कि उसके द्वारा आत्मिक जीवन प्राप्त हो और बढ़ता जाये. वह ईश्वर और मुक्ति की शिक्षा से भरपूर है जो आदमी मन से बैबल को पढ़ा करें कि उसकी आत्मा बचे और बने उस में मुक्ति का मार्ग पायेगा. उसका सारा ज्ञान आत्मिक

जीवन से मुख्य रीति से सम्बन्ध है. कई एक बातें हैं जिनके कारण उस को पढ़ा करना बहुत लाभदायक होगा. पहिली यह है कि उस में मुक्ति का मार्ग दृष्टि आता है. उस मार्ग का जानना सब को बहुत ही अवश्य है. उस से पाप की अपार बुराई और उसके सारे फल का ज्ञान मिलता है. बैबल के द्वारा जाना जाता है कि किस उपाय से पाप और मन की मलीनता दूर की जावे और कुकर्म्मों के करने से हम कैसे बचें. उस में कितनों का बर्णन मिलता है जिन्हों ने पाप से छुटकारा पाकर ईश्वर से संगति और मित्रता प्राप्त किई. वह हमारे लिये नमूना हैं. बैबल में यह शिक्षा भी है कि सच्चे धर्म का बदला और फल कैसा उत्तम और धन्य है. फिर जब बैबल जैसा कि

चाहिये काम में आये तो उसमें हमारी आत्मा के प्रतिपालन की सब वस्तुयें मिलती हैं. वह गोया स्वर्गीय और ईश्वरीय बजार है जिस में सब कुछ जिस की आवश्यक्ता धर्म्मियों को हो सके पाया जाता है. यह बजार ईश्वर के सन्तानों के वास्ते सदा खुला रहता है और उस में भोजन और वस्त्र इत्यादि की चीजें बहुतायत के संग पाई जाती हैं उस बजार में किसी पदार्थ की कमी नहीं है. फिर बैबल के द्वारा से वह सारे फराइज प्रगट किये जाते हैं जिन को पूरा करना अवश्य ह. ईश्वर की सारी आज्ञायें जिन पर चला करना है उस में लिखी हुई हैं. उसके द्वारा जाना जाता है कि कौन से काम ईश्वर को प्रसन्न हैं और किन से वह घिन्न करता है, कि किन कामों से मनुष्य सुख

और कुशलता पायें और किन से विनाश प्राप्त होगा. बैबल के विषय में एक और बहुत बड़ी बात यह है कि उसी की ज्योति में ईश्वर अपने आप को मनुष्यों पर प्रगट करता है. जब आत्मा की आंखें ठीक हों और बैबल जांची जाये तो उसके उंजियाले में ईश्वर अवश्य दृष्टि आयेगा. एक बड़े ज्ञानी से यह प्रश्न किया गया, कि "आप बैबल को सत्य क्यों मानते हैं?" यही उत्तर दिया गया, कि "मैं उस में ईश्वर को पाता हूं" कितने आदमी बैबल को पढ़ते हैं कि उसकी शिक्षा को खंडन करें. जब यही चिन्ता हो तो लाभ की सूरत कम है. जब सच्चाई के साथ उस में ईश्वर का खोज हो तो उस ज्ञानी का तजरिबा प्राप्त होगा. बैबल के पढ़ने और समझने के लिये दिन ब दिन

समय निकलना चाहिये. जब मन लगाकर यह काम हुआ करे तो उस से जल्द बड़ी शांति और आनन्द प्राप्त होगा. पढ़ने में बैबल का बड़ा आदर करना अवश्य है. वह ईश्वर ही की लिखाई हुई पुस्तक ह. उस के समझने के लिये ईश्वर से बुद्धि और सहायता मांगनी चाहिये. ईश्वर का और मुक्ति का सच्चा ज्ञान बहुत ही गहरा है ईश्वर के सिखाने के बिना वह समझा न जायेगा. ईश्वर की प्रेरणा से यह धर्म्मपुस्तक लिखी गई, और उस के प्रेरणा से उस की शिक्षा आवश्यक्ता के अनुसार समझ में आयेगी वह प्रेरणा ईश्वर के पवित्र आत्मा के द्वारा लिखनेहारों को मिला. समझने के लिये उसी पवित्र आत्मा से सब को प्रेरणा भी प्राप्त हो सक्ता है. मांगने की शर्त से पवित्र

आत्मा हम को दिया जाता है कि बैबल के पढ़ने में समझ और आशीश दे. इसी दशा में बैबल के पढने में बड़ी प्रार्थना अवश्य है. जो मनुष्य बिन प्रार्थना किये उसे पढ़ा करे न उसकी मूल बातें समझेंगे और न उस में ईश्वर का दर्शन पायेंगे. कम आदमी बैबल की उत्तमता और मिठास को जानते हैं और कारण यही है कि ईश्वर से न्यारा रहते हुये उस को देखते हैं जब पवित्र आत्मा के द्वारा ईश्वर संग हो और हमें सिखाये तो बैबल की महिमा दृष्टि आयेगी ऐसीही दशा में बैबल में खाने के लिये ईश्वरीय भोजन, पीने के लिये अमृत जल, सांस लेने के लिये स्वर्गीय पवन, दृष्टि के लिये आत्मिक उंजियाला, पहिनने के लिये धर्म्म और पवित्रताई का वस्त्र और अपने वासा

के लिये सोनहला घर हम पाते हैं. उस पवित्र आत्मा की ज्योति में बैबल काम आये तो हम ईश्वर का सच्चा प्रणाम कर सक्ते हैं और उसके द्वारा उस सेवा की सामर्थ्य और तैयारी मिलती है जिस से दूसरों को भी मुक्ति प्राप्त हो. जगत में बहुत सी और पुस्तकें भी हैं जिन के देखने से आत्मिक जीवन का लाभ और बल मिलता है और जैसा अवसर मिले उन्हें पढ़ना उचित और अवश्य है, परन्तु सब में बैबल ही उत्तम और लाभदायक पाई जाती है. उन्हीं दूसरी पुस्तकों से अधिक आशीश मिलेगी जिनके द्वारा बैबल के समझने में सहायता प्राप्त हो. अड़तालीस बरसों से मैं इस उत्तम और ईश्वरीय पुस्तक को मन से पढ़ता आया हूं और अब तक उसकी महिमा और

बड़ाई बढ़ती रहती है. जब जब प्रार्थना और ध्यान के संग उस को देखता हूं तो उस में नई नई और बहुमूल्य बातें पाता हूं जिन से आत्मा को बड़ा आनन्द और सेरी मिलती है. उसी में सचमुच जीवन का सोता पाया जाता है. ऐसी उत्तमता और महिमा का भेद यही है कि मुख्य रीति से उसी में ईश्वर का आत्मा मिलता है मुझे आशा है कि पढ़नेहारे इस बात की परीक्षा करके बैबल की महिमा को देखें और उसे मन से ग्रहण कर लें ॥

२. सच्ची प्रार्थना नये और आत्मिक जीवन की रक्षा और बढ़ाव की एक बड़ी और मुख्य शर्त है. प्रार्थना करना, जब समझ और सच्चाई के साथ हो, ईश्वर से बातचीत करना है मसीह के द्वारा से

ईश्वर हमारे साथ हो जाता है कि प्रार्थना में संगति प्राप्त हो. यदि मन से निरन्तर प्रार्थना हुआ करे तो ईश्वर से यह संगति भी निरन्तर होगी. उस संगति में जो सच्ची प्रार्थना के द्वारा मिलती है ईश्वर की बड़ी महिमा दृष्टि आती है और ऐसी दशा में उसकी स्तुति बराबर की जायेगी. ईश्वर की बड़ाई और स्तुति का करना प्रार्थना का एक भाग है. फिर जब प्रार्थना में ईश्वर की ऐसी संगति प्राप्त होती है तो हम अपने अपराधों और निर्बलता और अयोग्यता भली भांति पहिचानते और यह बातें उसके आगे बड़ी दीनताई के संग मान ली जाती हैं. ऐसी बातों का इक़रार भी प्रार्थना की एक बड़ी बात है प्रार्थना में शरीर और आत्मा की आवश्यकता के अनुसार संसारिक

और आत्मिक वस्तुयें और आशीर्षें मांगी जाती हैं. इन का मांगना भी प्रार्थना है. ईश्वर का मुख्य बचन है कि ऐसी बिनती सुनकर मैं दिया करूंगा. जब प्रार्थना करते हुये हम ईश्वर की दया और प्रेम को देखें और उस से मांगे हुये पदार्थों को पायें तो उसका धन्यबाद करना उचित है. ऐसी प्रार्थनाओं से धर्मियों को बड़ी २ आशीश मिलती हैं और आत्मिक जीवन इस मार्ग में बहुत बढ़ता जाता है. बैबल के पढ़ने और प्रार्थना के करने में बड़ा मेल है. वह मुख्य रीति से एक दूसरे से सम्बन्ध हैं. बैबल के द्वारा ईश्वर मनुष्यों से बोलता है. प्रार्थना के द्वारा मनुष्य ईश्वर से बातें करते हैं. दोनों के द्वारा ईश्वर से अद्भुत संगति प्राप्त होती है. प्रार्थना करने से ऐसी शक्ति मिलती

है कि बैबल की बातें समझ में आयें. और उसका बड़ा आत्मिक धन अपना कर लिया जाता है. बैबल के पढ़ने से प्रार्थना करने में ऐसी अगुआई और सहायता प्राप्त होती है कि वह बड़ी आशीश और आनन्द का कारण हो जाती है. सच्ची प्रार्थना में मुख्य बिनती यही होगी कि मसीह के द्वारा ईश्वर आप हम को मिले और कि उस से संगति पूरी और बे रोक हो. जब ईश्वर आप हमारा हुआ तो आत्मा का धन गिनती से बाहर हो गया. जब यह तजरिबा मिले तो बैबल और प्रार्थना की महिमा जानी जायेगी. ऐसी दशा में स्वर्ग के चैन और आनन्द का बयाना प्राप्त हो जाता है. बैबल के पढ़ने और प्रार्थना के करने से जो मैं ने फल पाया मैं इस आशा से लिख देता हूं कि दूसरों

को वही लाभ पहुंचे और कि वह आत्मिक जीवन में भी भागी हो जायें ॥

३. मनुष्यों के आत्मिक जीवन की रक्षा और बढ़ाव की तीसरी शर्त और द्वारा यही है कि और लोगों के लिये वह सेवा करें जिस से वह भी मुक्ति को प्राप्त कर लें. सब आदमी जो पाप से बचाये जायें और ईश्वर से संगति पाय याजक का पद पाते हैं. याजक वही है जो ईश्वर के घर में बे रोक प्रवेश कर सक्ता है. सब सच्चे याजक ईश्वर के संग होकर अपने जीवन को बिताते हैं. वह ईश्वर के मुख्य मित्रों में गिने जाते हैं. वह जन जो ईश्वर का बैरी या बिरोधी है सच्चा याजक नहीं हो सक्ता है. जब ऐसा बड़ा दर्जा किसी को दिया जाये तो इस बिचार से नहीं है कि वह केवल

अपनीही भलाई को प्राप्त करे. सच्चे याजक का सब से बड़ा काम यही है कि दूसरों के लिये बिनती किया करे और उनकी ऐसी सेवा करे कि वह भी प्रभु की ओर फिरें और पाप से उद्धार पायें. हर एक धर्म्मी की विन्ती और सेवा से किसी न किसी आदमी की मुक्ति सम्भव है. सब मनुष्य जो ईश्वर से मेल और मित्रता रखते हैं उसके चुने हुये हैं कि उनके द्वारा से संसार के लोग मुक्ति की शिक्षा सीख लें और पश्चात्ताप करके प्रभु को ग्रहण कर लें और बचाये जायें. ऐसी सेवा प्रेम की सेवा होगी. जब ऐसा प्रेम हो तो आवश्यकता के अनुसार आदमियों के शरीर के लिये भी चिन्ता किई जायेगी. जब दूसरों की मुक्ति और भलाई के लिये जैसा कि चाहिये बिनती और परिश्रम किया

जाये ते करनेहारों को वही आशीष प्राप्त होगी. ऐसी सेवा और बिनती से हमारा आत्मिक जीवन स्थिर रहेगा और बढ़ता जायेगा. ऐसे बड़े काम के लिये प्रभु आप समझ और सामर्थ्य देता है वही साथ होकर ऐसी सेवा में फल दिया करता है. जब सचाई और हिम्मत हो ते मसीह आप अगुवाई करता और सिखाता है कि किस किस को और किस किस रीति से ईश्वर की ओर फिरना है. एक धर्म्मी का यही वर्णन है. वह संसारिक पेशे से अपना गुजारा करता था. उसकी आमदनी यहां तक बढ़ गई कि उसके पादरी को चिन्ता हुई कि ऐसा न हो कि वह लालच में फंसकर प्रभु की संगति से न्यारा हो जाये. ऐसी दशा में पादरी साहिब ने उसके पास आकर

प्रेम के साथ उससे बिनती किई कि एक पड़ोसी के लिये प्रार्थना और परिश्रम करे ताकि वह पाप से बच कर सच्चा धर्म्मी बने. साहिब ने उस भारी और कठिन काम को ग्रहण किया. प्रभु के अनुग्रह और सहायता से उस बड़ी सेवा में वह कामयाब हुआ. वह पड़ोसी नया और अच्छा आदमी बना. उस पड़ोसी के बचाने में उस साहिब ने ऐसी आशीस और आनन्द पाया कि उस ने चाहा कि मैं किसी दूसरे को भी प्रभु के पास खींच लाऊं. फिर ईश्वर ने अगुवाई और सामर्थ्य दी और वह जीत गया. इस बड़ी सेवा में उस साहिब को ऐसी अभिलाष और हिम्मत हुई कि उसके द्वारा डेढ़ सौ आदमी मसीह को ग्रहण करके आत्मिक जीवन में उसके साथ भागी

हुये. उस बड़ी सेवा का एक फल यह भी हुआ कि वह साहिब जिसके द्वारा से इतने मनुष्य बिश्वासी और धर्म्मी बने बहुत बलवन्त हुआ और लालच के जाल से बचा रहा. उसको इसी सेवा में पाप के जोखिम से शरण मिली और उसका आत्मिक जीवन बहुत बढ़ता गया. वही जन अधिक आशीस और अनुग्रह पायेगा जो दूसरों की भलाई और मुक्ति के लिये बिनती और परिश्रम करेगा. जब हम भूखों पियासों को आत्मिक भोजन और अमृत जल खिलायें पिलायें तो आप खूब खायेंगे पीयेंगे. वही मनुष्य धन्य रहता है जो अपने जीवन औरों को धन्य करने में बितावे. एक मेरा धनवान और धर्म्मी जान पहिचान था. एक दिन किसी कारण उसका मन बहुत भारी और उदास हुआ.

उसको ज्ञान न था कि क्यों ऐसी बेचैनी हुई. उस दशा में यह विचार मन में आया कि "मैं कंगालों को कुछ दूं." कई सौ रुपिया लेकर वह घर से निकला और रोगियों और बिधवाओं इत्यादि में घूमते हुये बांटता गया. बहुतही जल्द शान्ति और आनन्द उसके मन में जारी हुआ और नदी की नाईं बहता गया. उसका सारा शोक और व्याकुलता दूर हुई. ईश्वर के उंजियाले से उसका मन भर गया. ईश्वर ने हमको दूसरों की सेवाही के लिये उत्पन्न किया और इसी मार्ग में आत्मिक जीवन की रक्षा और बढ़ाव की सूरत है अपस्वार्थी का जीवन बहुतही छोटा है और घटता जायेगा. वह लखपती या करोड़पती जो अपनेही लिये जीता है भिखारियों

से भी अधिक कंगाल रहता है. शरीर पले तो पले पर उसकी आत्मा भूखों मरेगी. जब मनुष्य नया जन्म पाकर ईश्वर के सन्तान बने और अपने प्रभु और दूसरे लोगों के लिये जीयें तो सच्ची बड़ाई और पूरी कुशलता प्राप्त करेंगे. उन्हीं को वह धन दिया जायगा जो बहुमूल्य है और सदा लों काम आवेगा और पूरी सेरी का कारण होगा. वह धन सदा लों बढ़ता भी जायेगा. मुझे बड़ी चिन्ता और चाह है कि परीक्षा करने से सब पढ़नेहारे बैबल और सच्ची प्रार्थना और आत्मिक सेवा की उत्तमता और महिमा जान लें. जो बातें मैं ने तजरिबा से सीखीं सो मैं आत्मिक जीवन की रक्षा और बढ़ाव के विषय में इसी आशा से लिख देता हूं कि दूसरों के लिये वह आशीस और सहायता का कारण हों ॥

ग्यारहवां पर्व्व ॥

आत्मिक जीवन की भरपूरी.

वह नया और आत्मिक जीवन जैसा उस रात को मुझे दिया गया बहुत बड़ा बरदान ठहरा. उसके साथ ईश्वर की सच्ची पहिचान मिली और आधीनताई और आज्ञाकारी का स्वभाव दिया गया. उस समय से ईश्वर का बड़ा प्रेम मुझ में जगह पाता रहा. ईश्वर से फिर न्यारा होने का बिचार तक भी न हुआ. उसके पीछे वह ज्ञान और आज्ञा-कारी और प्रेम बढ़ते गये. परन्तु उस रात से मेरी आत्मा में पूरी सेरी बराबर न रही. ईश्वर की संगति और दर्शन मैं तो पाता गया. मेरी इच्छा में इस बात की स्थिरता रही कि मैं ईश्वर के मार्ग से न हटूं. लगातार

और सच्चाई के साथ मैं ईश्वर का प्रणाम और सेवा करता रहा. बैबल के पढ़ने और प्रार्थना करने में मैं बहुत वक्त लेता गया अपने काम को मैं परिश्रम और यत्न के साथ चलाता रहा. जान बूझ कर मैं ने अपने मन में किसी बुराई को जगह न दिई. तौ भी कभी कभी अपनी आत्मा में बिश्वास की घटी दृष्टि आती थी. बार बार प्रार्थना करने में जैसा कि चाहिये मन न लगता था. मये जीवन में किसी किसी वक्त फीका-पन सा हुआ. ईश्वर की संगति में लगातार पूरी सेरी न मिली. मैं इन बातों के विषय में निर्बल हुआ. मैं ने यह भी जान लिया कि कभी कभी मेरी आत्मा में कोई कोई बात उठती जो पुराने जीवन से सम्बन्ध है. ऐसी बातें मेरी इच्छा के बिरुद्ध

बरपा हुई यह मुझ पर प्रगट हुआ कि हृदय में पहिले के बैरियों में से कोई कोई अब लों हाजिर है. वह बैरी राज करने तो न पाते थे, पर तौ भी ईश्वर की संगति में पूरी सेरी के पाने से वह मेरी आत्मा को कुछ न कुछ रोका करते थे. उनके कारण वक्त बवक्त मेरे मन पर बादल सा छा जाता था. जब मैं अधिक सीखता गया और ईश्वर से बिनती करता गया तो यह ज्ञान मुझे मिला कि इन सारे बैरियों से भी प्रभु की शक्ति और काम के द्वारा छुटकारा प्राप्त हो सक्ता है. जबमेरे मुक्तिदाता मेरे भीतर के बैरियों की सेना पर जय-वन्त हो चुका तो क्या, वह दस एक सिपाहियों से हार जावेगा जो अलग अलग होकर छिप रहे हैं कि मुझे हानि पहुंचा दें ? हमारा प्रभु ऐसा

दुर्बल नहीं है कि ऐसें से उसका बड़ा काम रूक जाये. जब अधर्म के अठारह बिसवे उसकी शक्ति से दूर किये गये तो क्या, वह दो बिसवे जो रह गये उसके द्वारा मिटाये न जायें? जब उसने मुफ्त में अपना राज जारी करके अपने लिये चौदह आने का प्रेम प्राप्त कर लिया तो क्या, वह सोलह आने का हाजिर नहीं कर सक्ता है? जब वह मुफ्त में मुक्ति के काम का आरम्भ कर चुका, तो क्या वह उसको पूरा नहीं कर सक्ता है? जब प्रभु यीशु के द्वारा ईश्वर आप हमारा अधिकार बना तो निश्चय यह अधिकार ऐसी भर पूरी के साथ मिल सकेगा कि हमारी आत्मा की सेरी सिद्ध हो जाये. बैबल में ऐसी सेरी और सिद्धता का बहुत बर्णन मिलता है. कितने जनों का संदेश उस में

पाया जाता है जिन्हों ने ईश्वर की संगति में आत्मिक जीवन की भरपूरी पाई और वह सब ऐसे बैरियों से पूरी रीति से बचे रहते थे. प्रभु यीशु ने बार बार ऐसी सिद्धता का वर्णन किया और यह आज्ञाई दिई गई है, कि "तुम ईश्वर की सारी पूर्णता लों पूरे किये जाओ." जब लों ऐसी पूर्णता प्राप्त न हो तबलों हमारे स्वर्गीय पिता की सारी इच्छा पूरी न किई जायेगी. जब पहले धर्म्मियों ने ऐसी भरपूरी पाई तो संसार की भलाई के लिये उनसे बड़ी सेवा हुई. जब मैं ने ऐसी भरपूरी के आत्मिक जीवन का ज्ञान पाया और उसकी आवश्यक्ता को समझ लिया तो मैं बड़ी अभिलाष से उसका खोज करने लगा. मैं ने नई रीति से अपने आप को ईश्वर के लिये अभिषेक

किया और उससे बड़ी बिनती किई कि यह बहुमूल्य आशीस मुझे दी जावे. मैं ने वह पूरी पवित्रताई और शक्ति और प्रेम और धर्म की सम्पत्ति जो जीते जी मनुष्यों को मिल सके बड़ी चाह और लालसा से मांगी. ईश्वर ने मेरी बिनती सुनी और ऐसी बहुतायत और पूर्णता के संग मांगा हुआ बरदान दिया कि मेरा आनन्द बयान से बाहर और महिमा से भरा था. ईश्वर की संगति नई रीति से प्राप्त हुई. आत्मिक आशीसें बड़ी अधिकाई के संग मिलने लगीं मुझे पहिले ज्ञान न था कि ऐसी पूर्णता का तजरिबा मनुष्यों को दिया जाता है. ईश्वर का यह बड़ा काम मेरी आशा से बहुत आगे पहुंचा. मन की सेरी नई रीति से पूरी होने लगी. ईश्वर का दर्शन बहुत अधिक अद्भुत हुआ.

बैबल की उत्तमता और महिमा बहुत बढ़ गई. प्रभु का पवित्र आत्मा नई रीति से मेरा गुरू और अगुवा हो गया. उस आत्मा के उजियाले में यीशु मसीह सारे स्वर्गीय बरदानों का द्वारा दृष्टि आया. उसकी महिमा बहुत अधिक सफाई के साथ दिखाई देने लगी. पवित्र आत्मा में प्रभु यीशु के द्वारा पिता परमेश्वर के पास पहुंचने का अधिकार बेरोक मिला. प्रार्थना करने और बैबल के पढ़ने में ईश्वर से गोया साक्षात बातचीत होने लगी. ईश्वर के भजन और सेवा करने में बड़ी मिठास और आनन्द पाया जाता था, और वह सारा फीकापन जो पहिले होता था दूर हुआ, बिश्वास में नया बल दृष्टि आया और उसकी पायेदारी बहुत बढ़ गई आत्मिक काम के चलाने की नई

सामर्थ और फलदारी प्राप्त हुई. नई रीति से मन में प्रेम की अग्नि जलने लगी. ईश्वर का राज जो मनमें जारी किया गया था बहुत अधिक प्रसन्न हुआ. प्रभु के अनुग्रह और ज्ञान में मैं अधिक बढ़ता गया. ईश्वर की इच्छा पर चलना और उसकी ठहराई हुई सेवा को पूरा करना मेरे मन का मुख्य इरादा बना रहा. आत्मिक जीवन की ऐसी भरपूरी की शिक्षा ईसाइयों की सब मंडलियों में पाई जाती है और यह हो सक्ता है कि सब विश्वासी और धर्म्मी लोग उसका तजरिबा जानें. मसीह के कितने चेले मिलते हैं जिनकी यही शाक्षी है कि प्रभु के द्वारा ईश्वर की संगति में ऐसी सेरी और पूर्णता प्राप्त हुई. ऐसेही जीवन के पाने से इस जगत में वह आत्मिक सेवा जो ईश्वर की

ओर से हमको मिली पूरी हो सकी है और उसी को पाकर परलोक के काम की तैयारी भी प्राप्त होगी. जबही ऐसी अधिकाई का आत्मिक जीवन मिले तो जैसा कि चाहिये हम बढ़ते भी जायेंगे. जब शर्तें पूरी किई जायें तो गोया हमारी आत्मा का घेरा बढ़ता जायेगा. लुटिया का भर देना और बात है और पीपे को भर देना और. आत्मिक जीवनमें गोया लुटिया बढ़ते बढ़ते पीपा हो जाता और पीपा बढ़ते बढ़ते तलाव, और तलाव बढ़ते बढ़ते नदी. ऐसे बढ़े हुये जीवन के लिये ईश्वर में भरपूरी बनी रहती है. जब बैबल खूब काम आवे, और प्रार्थना निरन्तर होती रहे, और और दूसरों के बचाने में सेवा पूरी किई जावे तो हमारी आत्मा आप बढ़ती रहेगी.

जब ऐसा आत्मिक जीवन प्राप्त हो तो मनुष्य अपनी दुर्बलता और कंगाली को भली भांति जानकर पूरी रीति से समझेंगे कि सारी पूर्णता जो मिल सके ईश्वरही की ओर से है. ईश्वरही में हमारी आत्मा के लिये धनवानता की दशा हो सकी है. उस से न्यारा कंगालता बेहद्द बनी रहेगी. ऐसा जीवन पाकर मन में घमंड जगह न पायेगा. ईश्वर के साथ साथ रहते हुये सदा नये नये बरदान प्राप्त हुआ करते हैं और प्रेम और चैन और आनन्द और बल की नदी अधिक गहरी और चौड़ी होती जाती है. बुढ़ापे के काल में शरीर की दुर्बलता बढ़ती जाती है, परन्तु आत्मा की कुशलता और सामर्थ्य अधिक होती जायगी. ईश्वर के सन्तानों की आत्मायें जवानीही की दशा में

बनी रहती हैं, और उनकी शक्तियां सदा बढ़ती जाती हैं. प्रभु यीशु में आत्मिक जीवन की पूर्णता स्थिर रहती है. मसीह मृत्यु पर जयवन्त हुआ और सर्वदा लों जीता रहता है. वह अपनों से यह कहता है, कि "चूंकि मैं जीता हूं, तुम भी जीते रहोगे." जब हमारी आत्मा ईश्वर से पूरा मेल और मित्रता रखती हो तो इस रोगी और दुर्बल शरीर से अलग हो जाना और स्वर्गीय घरों में जो हाथ के बनाये हुये नहीं हैं प्रवेश करना मृत्यु नहीं होगी. बासा की ऐसी तबदीली सब विश्वासियों के लिये बड़े आनन्द और शांति और कुशलता की बात ठहरेगी. देह के मरने के विषय में तबही व्याकुलता और घबड़ाहट हो जब कि ईश्वर से संगति प्राप्त न हुई. प्रभु के बचाये

हुओं के लिये शारीरिक मृत्यु में हानि का पता भी न मिलेगा.

मैं इस छोटी पुस्तक में अड़तालीस बरस की बातों का तजरिबा लिख देता हूं. समय बस हुआ कि इन बातों की भली भांति परीक्षा किई जावे. ऐसी परीक्षा नाना प्रकार की दशाओं में हुई. कभी दुष्ट आत्मा शैतान से बड़ी लड़ाई हुई, कभी रोगी हुआ यहां लों कि जीने की आशा जाती रही, कभी मन के बड़े पियारे मृत्यु से न्यारे किये गये, बराबर आत्मिक सेवा का बोझ बहुतही भारी हुआ, परन्तु कभी ऐसा न हुआ कि ईश्वर का अनुग्रह या सहायता में घटी पाई गई और उसने कभी मुझे निराशी में न छोड़ा. कितनी बार उसकी दया और कृपा की अधिकाई के कारण मैं ने अचम्भा किया. उसने मेरी

बिन्तियों और बिचारों से बहुत अधिक अनुग्रह किया. मैं ने उसकी बिश्वास योग्यता सिद्ध पाई. सब धन्य ईश्वर से जिसने मुझे पाप से छुटकारा दिया, और मन की मलीनता को दूर किया, और मेरी सहायता और अगुआई किई, और मुझे अपनी संगति में भागी कर लिया, मैं सब पढ़नेहारों के लिये बिन्ती करता हूं कि वह भी प्रभु यीशु के द्वारा मुक्ति को प्राप्त कर लें और ईश्वर के सच्चे सन्तान बने रहें इसी मार्ग में मनुष्यों की पूरी भलाई और कुशलता की सूरत अद्भुत रीति से पाई जाती है ॥

समाप्तम्

—०—